पारिवारिक, सामाजिक आओर देश-प्रेमसँ प्रेरित मैथिली मौलिक नाटक

हठात् परिवर्तन

लेखक
आनन्द कुमार झा

प्रकाशक
दीपाली प्रकाशन
ग्राम + पो०- मेंहथ
झंझारपुर, मधुबनी
पिन- 847 404

प्रकाशक :
दीपाली प्रकाशन
(मेंहथ, झंझारपुर, मधुबनी)
13 / 16- बी., विशेश्वर बनर्जी लेन,
कदमतल्ला, हावड़ा- 711 101
मोबाइल- 09830848403

प्रकाशन तिथि :
स्वतंत्रता दिवस
15 अगस्त 2005

प्रथम संस्करण :
500 प्रति

मूल्य :
45/- टाका

मुद्रक :
प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा
दूरभाष : 248421

HATHAT PARIVARTAN
Maithili Drama by Anand Kumar Jha

प्रकाशकीय अभिव्यक्ति

मैथिली अभिनय साहित्यक चर्चा करिते श्री आनन्द कुमार झाक व्यक्तित्व निखरिकेँ आगाँ अबैत छनि । बहुत अल्प समयमे अपन प्रतिभा, कठोर परिश्रम, मृदुभाषी चरित्र आओर सार्थक लेखनीक बले मैथिली नाट्य लेखनक संसारमे एकटा अमेट पहिचान बनौलथिहेँ ।

श्री आनन्द कुमार झाजी चिन्तनशील आओर तेजस्वी युवक छथि । समाजक युवक-युवती वर्ग हिनका प्रति विशेष आशावान अछि । एहिमे कोनो दुइमत नहि जे हिनका नाटकमे युवा वर्गक समस्या हिनक कथ्यक केन्द्र बिन्दु रहैत छनि । एहि बदलैत परिस्थितिमे संघर्षशील, पिसाइत एखनुका नारी समाजक प्रति लेखक समाजकेँ सचेत, जागरूक आओर चिन्तनशील बनैक सन्देश दैत छथि । निश्चित रूपसँ हिनकर नाटक आजुक परिस्थितिमे मैथिली नाट्यलेखनमे एकटा परिवर्तन थिक, जे सफल आओर सर्वस्वीकार अछि । 'बदलैत समाज' 'पहिल परिचय' आओर ''हठात् परिवर्तन'' पोथी उदाहरणस्वरूप लेल जाए सकैत अछि । ई तीनू नाटक स्तरीय नाटकक पाँतीमे स्थान लए, लेखकक एकटा अलग पहिचान बनबैत अछि । एहिसँ पहिने 'टाकाक मोल', 'कलह' आओर 'धधाइत नवकी कनिआँक लहास' पोथी सभ वेश चर्चित रहल छनि ।

प्रस्तुत पोथी ''हठात् परिवर्तन''केँ सन्दर्भमे- प्रकाशनसँ पहिने दुइबेर सफल प्रदर्शन भए चुकल अछि । एहि नाटकक प्रथम सफल प्रदर्शन कोलकाताक प्रख्यात नाट्यसंस्था ''झंकार'' द्वारा श्री शंम्भु नाथ मिश्रक निर्देशनमे कोलकाताक प्रसिद्ध प्रेक्षागृह कलामंदिरमे (कलाकुञ्जमे) दिनांक 24 फरवरी 2002केँ रविदिन भेल । एकर द्वितीय सफल प्रदर्शन पुन: झंकार नाट्यदल द्वारा कोलकाताक प्रथम मैथिली नाट्य प्रतियोगिता समारोहमे दिनांक 29 अप्रील 2002केँ शिक्षायतन प्रेक्षागृहमे भेल, जाहिमे दुइटा श्रेष्ठ पुरस्कारसँ सेहो सम्मानित कएल गेल । सम्भवत: मैथिली भाषामे ई नाटक प्रथम प्रयोग थिक । समीक्षक लोकनिक मोताबिक श्री आनन्द कुमार झाजी द्वारा रचित ई नाटक ''हठात् परिवर्तन'' पूर्णरूपे सफल मानल जा रहल अछि । ई नाटक कोनो नीक निर्देशकक हाथमे पड़ि जानि तँ आग्रह एकर मंचन अवश्य करथि । आओर ओकर सूचना सेहो देथि जाहिसँ सम्भव भेने लेखक एहि अवसर पर उपस्थित भए अपनेक आयोजनकेँ आरो आकर्षणीय बना सकताह । पोथी पढ़लाक बाद अपने लोकनि चुप्पी नहि साधब । पत्राचारक माध्यमसँ नाटकक कथा-वस्तु, संवाद आओर भाषाक सन्दर्भमे सँक्षिप्त सन्देश पठा अहलादित करी । विश्वास अछि ई नाटक ''हठात् परिवर्तन'' पाठक लोकनिकेँ बहुत नीक लगतनि । समस्त पाठकगण, रङ्गकर्मी आओर नाट्य प्रेमीकेँ हार्दिक शुभकामनाक सङ्ग ।

दीपाली प्रकाशन

(मेंहथ, झंझारपुर, मधुबनी)
13/16-बी, विशेश्वर बनर्जी लेन
कदमतल्ला, हाबड़ा-1

अपन अभिव्यक्ति

हमरा हर्ष होइत अछि टाकाक मोल, कलह, बदलैत समाज आओर धधाइत नवकी कनिआँक लहासक अपार सफलताक बाद 'हठात् परिवर्तन' पोथी अपने सभक समक्ष प्रस्तुत करैत । एहि हर्षमय पावन पलमे कोटि-कोटि प्रणाम जनबैत छी अपन सुधि पाठक, दर्शक आओर कलाकार लोकनिकेँ जिनक प्रतिक्रियासँ उत्साहित भए 'हठात् परिवर्तन' पोथी छपौलहुँ । हम विशेष रूपसँ आभार प्रकट करैत छी मैथिली रङ्ग-मञ्च आओर निर्देशक लोकनिकेँ प्रति जे अपार कष्टक सामना करैत मैथिली नाटकक प्रस्तुति करैत छथि ।

हम स्मरण कए सत् सत् नमन करैत छी पूज्यनीय प्रभाषजीक जिनक आशीर्वाद पाबि एतए तकक बाट चलि सकलहुँ । हम कृतज्ञ छी डा० जयकान्त मिश्रजी, श्री सोमदेवजी, डा० रमानन्द झा रमणजी, श्री रामलोचन ठाकुरजी आओर श्री फूल चन्द्र मिश्र रमणजीक जिनक स्नेह भरल आशीर्वाद पाबि हमर साहित्यिक भंडार भरल रहैत अछि । हम नाम लेमए चाहब डा० प्रेम शंकर सिंहजी, डा० धनाकर ठाकुरजी, श्री दयानाथ झाजी, श्री सुशीलजी आओर श्री अशोक झाजीक जिनक निरन्तर प्रोत्साहन पाबि रचनाशील रहैत छी ।

हम विशेष रूपसँ आभार प्रकट करैत छी डा० विभूति आनन्दजी, श्री नवीन चौधरीजी, श्री विश्वनाथजी, श्री रमेशजी, डा० महेन्द्र नारायण रामजी आओर श्री अजीत कुमार आजाद जीक जे हमर रचनाकेँ ससक्कत बनाबए मे समय-समयपर पूर्ण सहयोग करैत रहैत छथि ।

प्रस्तुत नाटक ''हठात् परिवर्तन'' के सफल बनाबएमे प्रख्यात निर्देशक श्री शम्भु नाथ मिश्रजीक योगदान अविश्मरणीय रहत । हुनक पारदर्शी निर्देशन स्तरीय नाटकक पाँतीमे नाटककेँ ठार करौलक हिनकर जतेक प्रशंसा करी कम थिक । हम आभार प्रकट करैत छी झंकार थेटर कोलकाताक जे एकबेर नहि दर्शकक विशेष माँगपर कोलकाता सनहक महानगरमे दोसर बेर प्रदर्शनकए मैथिलीक समस्त रंग-मंच के मंत्र-मुग्ध कए देलक । हमरा गौरवान्वित सेहो । अन्नमे माँ-बाबूजीकेँ प्रणाम जनबैत दुनू छोट भाइ त्रिलोक आ अमरेन्द्र के प्रति स्नेह अर्पित करैत छी । चर्चा करब रिंकूकेँ जे नाम मात्र हमर कुशल गृहणीयेटा नहि, साहित्यिक पथक सहयोगी सेहो । सुख-दुखकेँ सामान्य बनबैत, अपन स्वप्नक त्याग करैत सभ समय हमरा प्रोत्साहित करैत रहैत छथि । जकर परिणाम ई पोथी सभ थिक ।

दीपाली प्रकाशनक योगदान विसराएल नहि जा सकैत अछि । कठिन परिश्रमकए प्रकाशनक खर्चा जुटा पोथी प्रकाशित केलक । मुद्रण कार्यभार हेतु श्री अरुण कुमार यादवजीक आभारी छी । तँ प्रिय पाठक, रंगकर्मी आ हृदय स्थलमे वास केनिहार दर्शक लोकनि आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि हमर पंचम भेंट ''हठात् परिवर्तन'' अपने लोकनिके बहुत नीक लागत । विशेष आर कतेक अपन आन्तरिक अभिव्यक्ति करू । तँ आग्रह पोथी केहन लागल से प्रत्योत्तर जरूर पठाबी ।

ग्रा०+पो०- मेंहथ
दूरभाष : 06273-228615

आनन्द कुमार झा

RAJEN NAGAR
M.A., L.L.B.
GENERAL SECRETARY, B.P.B.E.A.
PRESIDENT, A.I.B.E.A.

June 21, 2005

Few words about the Author

Shri Anand Kumar Jha is one of the promising writers in Maithili literature. His powerful writings are exposing social ills and problems of common people and acclaimed and received wider appreciation of the people not only in Maithili Samaj, but also of all others in Kolkata. He has already written four Dramas i.e. **"Takak Mol", "Kalah", "Badlayat Samaj" and "Dhadhait Navaki KanyaKa Lahas"** and these Dramas were staged in Kolkata and highly appreciated. This book contains another landmark in his writing and exposed the problems in family and society. It is a story of a misguided son of a reputed Army Family and at last he comes back to right track through family's patience, persuasion and self-realisation. The story titled **"Hathat Parivartan"** is not only educative but also show us a light to deal with such problem.

I am sure he will continue his literary work and enlighten the society with his pen.

I wish him a grand success.

Rajen Nagar

(RAJEN NAGAR)

निर्देशकीय अभिव्यक्ति

नाटक लिखब जतेक कठिन थिक, ओतबहि ओकर प्रस्तुतीकरण सेहो कठिन थिक । कोनहुँ नाटकक सफलताक हेतु उत्कृष्ट लेखनीय एवं रोचकपूर्ण कथेटा यथेष्ट नहि थिक । ओहिकेँ लेल चाही परिपक्व एवं अनुभवी निर्देशक एवं निष्पक्षतापूर्वक नाटकक पात्रक चयन । नीकसँ नीक नाटक अनुभव बिहीन निर्देशकक हाथमे पड़ि गेलासँ प्रस्तुति दुर्बल एवं उद्देश्य बिहीन भए जाइत अछि । ओना ई सत्य थिक मिथिलांचलमे एखनहुँ नीक रचनाकार एवं निर्देशकक अभाव बुझना जाइत अछि । यदि कदाचित किछु अछियो तँ लोक समाज, परिवार स्वस्थ प्रोत्साहन नहि दए उल्टहि हतोत्साहित कए नीचाँ खसयबाक प्रयास करैत अछि । नाट्यकार एवं निर्देशक असगर संघर्ष कए एवं अपसिआँत भए समाजक सम्पन्न एवं बुद्धिजीवी वर्गक मध्यमे उपेक्षाक पात्र एवं एकटा निछक बताह, विशाल समाज सँ फराक, क्रिया-कलापसँ निष्क्रिय एवं अन्यमनस्क भए जाइत अछि । तेँ सबसँ पहिने समाजसँ एहि पुरान जड़ता एवं वैचारिक अशिक्षाकेँ जाधरि उखाड़ि फेकि, समस्त जनमानसक मानस पटलमे नाट्यकार एवं रंगकर्मीक प्रति एकटा विशेष श्रद्धा एवं प्रेम-अनुरागक केन्द्र बिन्दु नहि बनौल जाएत, ताधरि ई असफलताक अन्हर-बिहारि अहिना बहैत रहत आ रोज एकटा लेखक, निर्देशक एवं रंगकर्मीक आकाल-मृत्यु अहिना होइत रहत । तेँ एहिकेँ लेल आवश्यकता अछि नाट्य क्रांतिक एवं एहि क्रान्तिक प्रादुर्भाव एवं ओकर धधराकेँ आओर प्रज्वलित करबाक लेल युवा लेखक श्री आनन्द कुमार झाजी अपन कलमक तरुआरि लए मिथिलांचलक दुर्गम पथ पर प्रसस्त भेलाह । हमर शुभकामना आओर आशीर्वाद अछि कि ओ अपन तीक्ष्ण कलमक प्रखरता सँ मिथिलांचलक कलुषित विचारधारा एवं सांस्कृतिक विपन्नताकेँ लुप्त कए नवका पिरहीकेँ रोगमुक्त एवं स्वस्थ समन्वय बना मिथिलाक हरायल-भुतलायल प्राचीन गरिमाकेँ ताकि जिनगीक नव एवं आधुनिकताक कसौटी पर आओर जीवंत उतरि सकथि ।

प्रायः इएह उद्देश्यसँ लिखलनि मैथिली मौलिक नाटक ''हठात् परिवर्तन'' जकर निर्देशन करबाक दायित्व हमरहि भेटल । ई सत्य थिक जे लेखक द्वारा नाटकक विषय वस्तु बहुत उत्कृष्ट चुनल गेल छल । जकर फलस्वरूप हम ओहि रचना के उच्च स्तरीय बनयबाक हेतु दिन-राति एक कए देलहुँ जकर परिणामस्वरूप 24 फरवरी 02 कए स्थानीय कलार्मंदिरक (तलकक्ष) प्रेक्षागृहमे अद्वितीय सफलता पाबि हमरा लोकनि अतिशय कृतार्थ भेलहुँ । ''हठात् परिवर्तन''मे आधुनिक नाट्य लेखन शैली, आधुनिकतम नव-नव टेकनिकक प्रयोग आओर समीचीन संवादक प्रयोग प्रशंसनीय आओर प्रतिस्पर्धावान अछि । आशा करैत छी लेखक श्री आनन्द कुमार झाजीक ई टटका नाटकसँ पाठक, निर्देशक आओर रंगकर्मी अति संतुष्ट होएता से हमर शुभकामना ।

शम्भुनाथ मिश्र

ग्रा०+पो०- पंचोभ, जिला- दरभंगा

झंकार द्वारा प्रदर्शित : हठात् परिवर्तन

प्रथम मंचन : दिनांक 24.2.2002 स्थान : कलार्मंदिर (कलाकुंज), कोलकाता

द्वितीय मंचन : दिनांक 29.4.2002 स्थान : शिक्षायतन प्रेक्षागृह, कोलकाता

-: पात्र परिचय :-

पुरुष-पात्रक भूमिकामे

पात्र	भूमिका	रंगकर्मीक नाम
कृष्ण चन्द्र प्रताप	अवकाश प्राप्त ब्रिगेडियर	श्री शम्भु नाथ मिश्र
गिरिधर चन्द्र प्रताप	ब्रिगेडियरक छोट बालक	श्री उत्तम चौधरी
गोपाल चन्द्र प्रताप	ब्रिगेडियरक जेठ बालक	श्री विवेकानन्द चौधरी
राजेन्द्र बाबू	ब्रिगेडियरक संगी	श्री दिनेश कुमार मिश्र
रोहण	ब्रिगेडियरक पोता	श्री मोहित कुमार झा
गोखुल	गिरिधरक मित्र	श्री विश्वम्भर झा
प्रकाश	गिरिधरक मित्र	श्री रमेश कुमार मिश्र

स्त्री-पात्रक भूमिकामे

सरस्वती	ब्रिगेडियरक पत्नी	श्रीमती माला मुखर्जी कुमारी निष्ठा केडिया
रंजनी	गोपालक कनिआँ	श्रीमती प्रतिभा सिंह
शालिनी	गिरिधरक पत्नी	श्रीमती पम्पा पॉल

विभिन्न भूमिका निर्वाहक

रूप सज्जा	:	श्री बूलन मण्डल
आलोक एवं मंच	:	श्री लाल दा
गीत	:	श्री शम्भुनाथ मिश्र
संगीत	:	श्री शांति सरकार
पार्श्व गायक	:	श्री दिनेश कुमार
विशिष्ट सलाहकार	:	श्री अभय कान्त झा एवं श्री केदार नाथ साह
विशिष्ट प्रबन्धक	:	श्री यदुनन्दन सिंह
मुख्य अतिथि	:	कर्नल तारानाथ राय (अवकाश प्राप्त)
लेखक	:	श्री आनन्द कुमार झा
निर्देशक	:	श्री शम्भुनाथ मिश्र



अंक : पहिल :: दृश्य : पहिल



बायाँ सँ - कृष्णचन्द्र प्रताप, सरस्वती एवं गिरिधर

अंक : पहिल :: दृश्य : सातम



बायाँ सँ - रंजनी, रोहन, सरस्वती, कृष्णचन्द्र प्रताप एवं मजेन्द्र बाबू

अंक : दोसर :: दृश्य : पहिल



बायाँ सँ - रंजनी, गिरिधर, सरस्वती, रोहन एवं शालिनी

अंक : पहिल :: दृश्य : पहिल

(अवकाशप्राप्त (रिटायर्ड) ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक हवेली । हवेलीसँ संलग्न एकटा सुसज्जित बैसार गृह । एकटा पलङ्ग अथवा चौड़गर सोफा देखना जाइछ । जाहि पर रोहण घोर निन्द्रामे सूतल अछि । मंचक मध्य चाह टेबुलसँ लागल एकटा कुर्सी अछि । मन्द प्रकाश मात्र रोहण पर पड़ैत अछि। समय रातुक दोसर पहर । नेपथ्यसँ घोषणा होइत अछि । घोषणाक बीच मद्धिम प्रकाश हवेलीक अवलोकन करबैत रहैत अछि ।)

घोषणा : ई प्रताप वंशक हवेली थिक । देश-प्रेम आओर सदभावनाक अजर-अमर धरोहरि । एकर एक-एकटा पजेबा जेना त्याग आओर बलिदानक कथा कहैत होए, पौरुष आओर पराक्रमक गाथा गबैत होए । स्वाधीनता संग्रामसँ लएकेँ आइ धरिक एकर इतिहास जेहने पैघ तेहने पवित्र आओर प्रेरणादायक । देशक मान मर्यादा आओर स्वाभिमानक रक्षार्थ अपन प्राणक आहुति देबाक लेल सतत् अग्रसर भेल एहि हवेलीक प्रत्येक सदस्य वीरताक अद्‌भुत आओर अभूतपूर्व इतिहासक निर्माण कएकेँ एकटा ज्वलन्त उदाहरण बनौलक अछि। स्वाधीनता सङ्ग्रामसँ लएकेँ एखन धरि कतेको बलिदान दए चुकल एहि आदर्श परिवारक वर्तमान स्तम्भ इएह रिटायर्ड ब्रिगेडियर कृष्ण चन्द्र प्रताप छथि । **(कृष्णचन्द्र प्रतापक हाथमे बेँत धयने चिन्तित मुद्रामे प्रवेश । सूतल रोहण पर नजरि पड़ैत छनि । ओकरा गाल आओर माथ पर स्नेहसँ हाथ फेरैत छथि । फेर ओकरा उपर चद्दरि ओढ़बैत छथि ।)** जे अहू अवस्थामे देशक कर्मठ सिपाही बुझि देशक रक्षा करबाक साहस आओर कौशल रखैत छथि । हिनक जेठ बालक गोपाल चन्द्र प्रताप भारतीय सेनामे कमाण्डरक पदकेँ सुशोभित करैत रहैत सीमा पर डटल छथि । किन्तु

बिडम्बना देखू, हिनक छोट बालक गिरिधरचन्द्र प्रताप कुसङ्गतिमे परि वंश परम्परा आओर आदर्शक विपरीत आचरण कएकें समस्त मान-मर्यादाकें मटिया-मेट करए पर तुलल अछि । माए-बापक संगहि लक्ष्मी स्वरूपा भाउजिकें बात-बात पर अपमान करब दिनचर्या बनि गेल छैक । तँ आउ एहि हवेलीक भीतर पैसि एकर वर्तमानक अवलोकन करी ।

(घोषणा समाप्त होइत अछि । कृष्णचन्द्र प्रताप किछु चिन्तन-मनन करैत सोफा वा कुर्सी पर बैसैत छथि । भीतर दिससँ सरस्वतीक प्रवेश होइत छनि । मंच पर रात्रिक उन्मुक्त प्रकाश पसरल अछि ।

सरस्वती : कथी लेल एतेक चिन्ता कए रहल छी ? चलू भोजन कए लिअ, रातिक बारह बाजए जा रहल अछि ।

कृष्णचन्द्र : बारह तँ एखन घरमे रहनिहारक लेल बाजल अछि । बाहरमे आवारागर्दी करएबला अहाँक बहसल बेटाक लेल नहि । ओकरा लेल तँ एखन साँझे पड़ल होएत । मनबैत होएत कतहु अपन आवारा मित्र मण्डलीक संग रास-लीला । किन्तु आइ हमहूँ निश्चय कए चुकल छी, जे एहि बातक निराकरण भएकें रहत ।

सरस्वती : अहाँ के हमर शप्पत थिक ! एखन ओकरा किछु नहि कहबैक । गिरिधर एखन अज्ञानी अछि । एखन ओकर बहिक्रमे की भेलै अछि ! खाली बढ़िकें ताड़क गाछ भए गेल अछि ।

कृष्णचन्द्र : गिरिधरक माए, अहाँक एहि तरहक दुलार-मलारसँ नाको दम भए चुकल छी । आइ ओकरा आबए दिअ, हम ओकरा स्पष्ट शब्दमे कहि देबैक जे जँ एहि घरमे रहबाक छौक तँ एहि घरक रीत-रेबाजक संग चलए पड़तौक, अन्यथा अपन बोरिया-बिस्तर उठा, आओर अपन मनमौजी जिनगी जीबाक लेल नजरिसँ दूर हटि जो ।

सरस्वती : नहि-नहि, एखन ओकरा किछु नहि कहबैक । ओ एहि समयमे अपन अधीनमे नहि रहैत अछि ।

कृष्णचन्द्र : किन्तु हम बिल्कुल अधीनमे छी ।

सरस्वती : हम अहाँक नेहोरा करैत छी । गिरिधरकें एखन किछु नहि कहबैक । अहाँकें जे किछु कहबाक अछि से भिनसरमे कहबैक ।

कृष्णचन्द्र : गिरिधरक माए, अहाँ हमरा डरबैत छी ? अहाँ ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापकें डरएबाक चेष्टा कए रहल छी । जे अपन सम्पूर्ण जुआनी शत्रुकें परास्त करबामे बिता देलक । नहि-नहि, एखनहुँ एहि जुआएल नस आओर पुरान हड्डीमे ओहने उष्ण शोणितक धार प्रवाहित भए रहल अछि । ओहने जोश आओर पुरुषार्थ एखनहुँ बुझना जाइत अछि जे आइसँ तीस बरख पहिने छल । बस खाली बएस बढ़ि गेल । किन्तु ई हमरा बेबस आओर निर्बल नहि बना सकैत अछि । हमरा एतेक कमजोर जुनि बूझू...

सरस्वती : एहि उमेरमे सन्तान पर बलक प्रयोग करब ? लोक सूनत तँ की कहत । हम कहैत छी जे एतेक रातिमे हल्ला-गुल्ला करब बुझनुक लोकक काज थिक ? टोल-पड़ोस सभ जागि जाएत तँ थू-थू करत ।

कृष्णचन्द्र : थू-थू करत तँ करए दिऔक । सभ दिनक खिचकाहिनसँ तँ मुक्त भए जाएब । ओ हमरा दुर्बल आओर बूढ़ बुझि गेल अछि । हम ओकरा ई ज्ञात कराबए, चाहैत छी जे ई बूढ़ ब्रिगेडियर एखनहुँ ओतबहि अडिग आओर कठोर अछि जतेक तीस बरख पहिने छल ।

(कृष्णचन्द्र प्रताप हाथक बेँतकें सक्कतसँ बकुटि अन्यमनस्क भावसँ सोफापर जाए बैसैत छथि । सरस्वती विचलित भेल माथ-कपार पिटैत अछि ।)

सरस्वती : हे भगवान ! ई की कपारमे साटि देलहुँ । एहि ठाम जेठको बेटा तँ अछि । एकहि कोखिसँ केना राम आओर रावण दुनू जन्म लए लेलक ? मुदा गिरिधरमे लाख खरापी किएक नहि होएक आखिर ओहो तँ सन्ताने छी । ओकरो तँ हम नौ मास धरि कोखिमे रखने छलहुँ । ओहो तँ हमर-अहाँक सन्तान छी ।

कृष्णचन्द्र : हम ओहि लम्पट सन्तानसँ हाथ धोए नेने छी । आओर आब अहूँ ओहि बेटासँ सबूर करू । मना लिअ मोनकें जे ओ बेटा मरि गेल । जे जूआ आओर दारुक निसाँमे एकबेर प्रवेश कए लैत अछि, ओहि मनुष्य पर जीवनमे कहिओ विश्वास नहि कएल जा सकैत अछि ।

(निसाँमे मातल गिरिधरक प्रवेश- ओकरा हाथमे एकटा दारुक बोतल अछि जे प्रायः खलिआएल अछि । सरस्वती गिरिधरकें पकड़ि भीतर दिस लए जएबाक प्रयास करैत अछि । किन्तु ओ झकझोरिकें छोड़ा लैत अछि ।)

गिरिधर : ओ मम्मी ! मम्मी !! ओ डैडी ! डैडी !! जिससे मेरी शादी होगी, आज मैंने वो लड़की पसन्द कर ली । ओ मम्मी मम्मी... अच्छा तँ अहाँ सबकेँ ई गीत नीक नहि लागल ! ठीक छैक, तँ हम गीत बदलि दैत छी । झूम बराबर... झूम शराबी... ओहो, ई गीत तँ हमरा स्मरण नहि अछि । ठीक छैक तँ फेर बदलि दैत छी । ई अवश्य नीक लागत । एहि बेरक गीत अहाँ सभक समयक गीत थिक । तेँ ई गीत पक्का नीक लागत-- उगना हमर कतए चलि गेला, कतए चलि गेला, शिव कीदहु भेला ! उगना... उगना छेँ रे... रे उगना... **(कृष्णाचन्द्र गीतमे लीन होइत छथि । किछु समयक लेल सभटा बिसरि जाइत छथि । मुदा गिरिधरक गीत बिचहिमे रुकि जाइत अछि । फेर पूर्व अवस्थामे आबि जाइत छथि ।)** की बाबूजी, ई गीत केहन लागल ? ई गीत तँ अहाँ सभक जमानाक गीत छी । की इहो गीत बढ़िआँ नहि लागल ? अच्छा छोड़ू दिस मैटर । माइ डियर बाबूजी, अपनेक की हाल-चाल अछि... ?

सरस्वती : गिरिधर रातिक एक बाजएबला अछि । बन्द करु ई सिनेमा-सर्कस । कोनो नीक लोकक बेटाकेँ अहाँ एना करैत देखैत छी ? आखिर एना किएक कए रहल छी ? कोनो सभ्य परिवारमे दारुक निसाँसँ वेमत्त ओकर बेटाकेँ एतेक राति-बिरातिकेँ अबैत देखैत छी ? अहाँक कारणे एखन धरि घरमे केओ नहि खेलक अछि । बूढ़ बाप भूखल-पियासल अहाँक प्रतीक्षामे चिन्ता कए रहल छलाह । जे कखन हमर दारुबाज, जुआबाज बेटा आओत तखन खाएब ।

गिरिधर : माए, ई इङ्गलिशक रामायण आओर फारसीक महाभारतक बखान कने कम करू । आइ काल्हि अहूँ कने बेसिये बाजए लगलहुँ अछि । हँ तँ की कहलहुँ ? नीक लोकक बेटा... **(हँसैत अछि)** हमरा दुआरे एखन धरि घरमे केओ खएलक नहि... ? नहि खाए गेलहुँ तँ बढ़िआँ कएलहुँ । कारण आइ हमरा बड़ जोरक भूख लागल अछि । सभटा आइ हमही खाएब... ।

सरस्वती : चलू गिरिधर, चलू भीतर चलू । बापक समक्ष बेटा एना नहि बजैत अछि । लाज-धाखसँ मुँह तक नहि उठबैत अछि । आओर एकटा अहूँ बेटा छी... बस करू... चलू... ।

गिरिधर : छोड़ू माए, हुँ बाबूजी, **(हँसैत)** ई बाबूजी, हमर बाप नहि, दुश्मन छथि । दुश्मन । एनेमी... लोक कहैत अछि गिरिधर तोहर बाप भूतपूर्व ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रताप एहि गामक शान, मान आओर अभिमान छथि । **(हँसैत अछि)** मुदा हमरा लेल छथि एक नम्बरक कंजूस, मक्खीचूस... । जे कहिओ नहि देलनि हमरा एकटा लमनचूस... !! से हमरा कहता बात-बातमे फन्टूस... । हमरा जेबीमे एकटा फूटल कौड़ी नहि रहैत अछि । दोसर सभक आगाँमे हाथ पसारए पड़ैत अछि । हम बोर बनैत छी, बोर । मक्खीचूस... । मनहुस... ।

कृष्णाचन्द्र : **(उच्च स्वरे)** गिरिधर... बहुत कालसँ हम तोहर बकबास सुनि रहल छिऔक । हम किछु कए बैसी ओहिसँ पहिने हमरा आँखिक सोझासँ चलि जो । एतेक रातिकेँ तोरा संग हम बहस नहि करए चाहैत छी ।

गिरिधर : ओ... तँ ई बात थिक ? जँ हम नहि जाएब अहाँक सोझाँसँ तँ हमर अहाँ की कए लेब ? हमहूँ कहैत छी, चुप-चाप अहूँ हमरा सोझासँ सोझे अपन बेड-रूममे चलि जाउ । आब अहाँक उमेर भेल विश्राम करबाक । बस आब विश्राम करु, आओर भगवानक नाम लिअ ।

कृष्णाचन्द्र : गोपालक माए, हमर तामस कोनो दोसर रूप लए लिएह ओहिसँ पहिने एकरा एहिठामसँ लए जाउ... जल्दीसँ लए जाउ ।

गिरिधर : बाबूजी, जोरसँ बजलासँ हम नहि डराएबला छी । फरिछएबाक अछि तँ फरिछाए लिअ । हमरा सभ कथुक गुमान अछि । तागते अजमएबाक अछि तँ अजमाए लिअ ।

सरस्वती : हे भगवान ! हमरा घरमे सभहक कपार पर कोन अदिन्ता सबार भए गेल छैक ! गिरिधर हमर बात मान, एतएसँ एखन चल । तोँ एखन सुधि-बुधिमे नहि छेँ । ला बोतल दे हमरा हाथकेँ ।

गिरिधर : माए ई बोतल हमरा हाथमे रहए दे । इएह बोतल तँ हमर जिनगी छी ! जे सदिखन हमर संग रहैत अछि । कखनहुँ खाली तँ कखनहुँ भरल । किन्तु बाँकी सभ हमर दुश्मन अछि... दुश्मन ।

हँ बाबूजी, चुप किएक भेलहुँ ? (**एक घोँट पिबैत**) लिअ लगा एक घोँट, अहूँक बुढ़ापामे जुआनी चढ़ि आओत। तागत दुगुना बढ़ि जाएत । हओ, आइ फरिछाए लिअ हमरासँ... ।

कृष्णचन्द्र : कुकर्मी... कुलनाशक । (**कृष्णाचन्द्र प्रताप आवेशमे आबि गिरिधर पर बेँतसँ प्रहार करैत छथि । गिरिधर सेहो हुनकर हाथ पकड़ि लैत अछि । निसाँसँ मत्त भेल गिरिधरक संग कृष्णाचन्द्र प्रतापक झीका-तीरी चलैत अछि । पलङ्गपर सुतल रोहणक निन टूटि जाइत अछि । ओ आँखि मिरैत डराएल ठाढ़ होइत अछि। सरस्वती हैओ-दैओ कए बचएबामे लागल रहैत छथि । हो-हल्ला सुनि, भीतरसँ रंजनीक हड़बड़ाएल प्रवेश । कृष्णचन्द्रक अन्तिम प्रहारमे गिरिधरक माथसँ शोणित बहय लगैत अछि । सरस्वती कृष्णाचन्द्रसँ बेँत छिनि, अलबा-दोलबा करैत बलजोरी कृष्णाचन्द्रकेँ भीतर दिस लए जाइत छथि । रंजनी गिरिधरकेँ पकड़ि पलङ्ग आकि सोफा पर बैसाबैत अछि ।**)

गिरिधर : छोड़ि दिअ हमरा भाभीश्री (**माथक शोणित हाथमे लगाकेँ**) देखै जाइ-जाउ ! बाप बेटाक कपार फोड़ि देलक । देखू हमर लाल टटका शोणित गबाही दए रहल अछि । किन्तु हम एकर बदला लएकेँ रहब। कहि दिअनु भाभीश्री, हमरासँ बाँचिकेँ रहताह । हमहूँ कपार फोड़िकेँ रहबनि ।

(**रंजनी पुनः माथ धेने बैसाबैत अछि**)

रंजनी : बौआ आब बड़ नाटक भेल । टोल-पड़ोस सभ जागि चुकल अछि। प्लीज बौआ, आब चुप रहू ।

गिरिधर : भाभीश्री, अहाँ सभ गोटा सिखा-बुद्धि कए हमरा संगे एना किएक करैत छी ? अहाँ कनेक सोचू ने, एकटा बुझनुक बाप, अबुझनुक बेटाक कपार फोड़ि देलक । देखू तँ कतेक लाल अछि हमर शोणित। हम ओहि देशक वासी छी, जाहि देशमे एकटा बाप अपन बेटाक कपार फोड़ि देलक । आइ एम ए ग्रेट मैन, माइ फादर इज ऑलसो ए ग्रेट फादर । (**गिरिधर बजैत-बजैत बेहोश होइत सोफा पर खसि पड़ैत अछि । रंजनी हाथसँ दारुक बोतल लएकेँ नुकाकेँ राखि दैत अछि आओर गिरिधरकेँ मरहम पट्टी करए लगैत अछि ।**)

रोहण : मम्मी, हम कतए सुतब ? हमरा बड़जोर ओंघी लागल अछि ।

रंजनी : अहाँ एखन धरि एहिठाम ठाढ़े छी, अहाँ दादाजीक कोठलीमे चलि जाउ ।

(**रोहण भीतर चलि जाइत अछि । रंजनी मरहम पट्टीसँ निवृत होइत अछि । दारुक बोतलमे सँ किछु हिस्सा हटाए ओहिमे पानि मिला दैत अछि । आओर पुनः सोफाक तरमे नुकाए राखि दैत अछि । अही बीच सरस्वती गिरिधरक वास्ते थारीमे भोजन लएकेँ प्रवेश करैत छथि । भोजन टेबुल पर राखि गिरिधरक माथ लग बैसि कानए-बाजए लगैत छथि ।**)

सरस्वती : कोन दुरमतिआ नेनाकेँ घेर लेलक से नहि जानि !

रंजनी : माँ, कने बाबूजी केँ बुझबथुन्ह । माथ-कपार फोड़ि देलासँ ज्ञानक प्रकाश नहि देल जा सकैत अछि। एहि घरमे जेहने अबुझनुक तेहने बुझनुक । सभ एकहि रङ्ग ।

(**हठात् गिरिधरकेँ होश अबैत अछि । ओ अर-दर बाजए लगैत अछि। रंजनी आओर सरस्वती ओकरा गसिकेँ पकड़ैत अछि...**)

गिरिधर : नहि,... हमरा छोड़,... हम नहि छोड़बन्हि, कहाँ गेलाह हमर बाबूजी ? ओ हमर कपार फोड़ताह ? ओहो एकटा निहत्थाकेँ, हम हुनका आइ किन्नहुँ नहि छोड़बन्हि... ।

(**गिरिधर चाहैत अछि छोड़ाकेँ भीतर दिस जाइ नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।**)



दृश्य : दोसर

(**मंच व्यवस्था पूर्ववते थिक । समय भिनसुरका पहर । गिरिधर एखनहुँ सुतले अछि । किछु काल उकस-पाकस कएलाक उपरान्त ओ भकुआएल मुद्रामे उठि बैसैत अछि । चहुँ दिसि आँखि गुड़ारैत अछि । किछु बिचलित भेलाक बाद सगरे तकैत-तकैत सोफाक नीचाँसँ दारुक बोतल बाहर करैत अछि । अचानक सेन्टर टेबुल पर राखल रातुक भोजन पर ध्यान आकृष्ट होइत छैक । दारु आओर भोजन दुनूकेँ निघटएबाक लेल उद्यत होइत अछि ।**)

गिरिधर : (दारुक बोतल हाथमे लए) तोँ कतए नुकाए गेल छलए । हमर लालपरी । कमसँ कम तोँ तँ हमर संग नहि छोड़ जानी । बस तोँही तँ एकमात्र हमर सहारा छेँ । हमर भुतिआएल जिनगीक तोँही तँ हमर रंग-बिरंगक सपनाक चान-तारा आओर इशारा छेँ । तोँही तँ हमर रंग-बिरंगक सपनाक चान-तारा आओर सितारा छेँ । (**घोँट लैत देरी हिचकी**) ऐँ ? मिलाबट ? निश्चित रूपसँ मिलाबट । गए सितमगर तोरोमे मिलाबट । बर-कनिआँमे मिलाबट, नेता-अभिनेतामे मिलाबट, चिक्कस-चाउरमे मिलाबट । दूधमे मिलाबट तँ पुरान बात थिक । किन्तु आब एहि बोतलोमे मिलाबट । बाह रे दुनिआ, बाह । मिलाबटोमे मिलाबट... हा... हा... (**सजेन्द्र काकाकेँ प्रवेश । गिरिधरकेँ देखिते मोन घिरता-घिन होइत छनि ।**) सजेन्द्र काका, आउ-आउ, आसन ग्रहण करू । भिनसरे-भिनसर हमरा घरमे पधारलहुँ, एहिकेँ वास्ते स्वागत अछि । हार्दिक अभिनन्दन अछि । (**बोतल बढ़बैत**) एक घोँट चलतैक ? (**कान पकड़ि**) ना... ना... ना ना नारे... अहाँ सब तँ ठहरलहुँ साधु-महात्मा ! पुछबो पाप थिक । महापाप ।

सजेन्द्र : (**नाक-मुँह भिनकाबैत**) गिरिधर, रातुक निन तँ सभक कामहि कएबे कएलहक, आब ई भिनसरे-भिनसर फेर कोन दोसर नाटक बेसाहैत छह ? (**गिरिधर भोजनसँ निवृत होइत अछि । ओ हाथ नहि धो, बेडसीटमे हाथ पोछि लैत अछि ।**)

गिरिधर : नाटक ? की कहलहुँ काका जी, नाटक ! ई नाटक नहि काकाजी यथार्थ थिक । यथार्थ ! ओना काकाजी ई जिनगिंओ तँ एकटा नाटके छी । हमहूँ नाटक, अहूँ नाटक, ई समस्त भूमण्डल एकटा नाटक थिक ।

सजेन्द्र : किन्तु एहि तरहक घटिया नाटक कएकेँ कोनो उतकिरना नहि करैत छी । ई सभ कएलासँ किछु नहि भेटत, किछु नहि । हम कहैत छिअ एतेक रास टाकाकेँ बिनु प्रयोजनक दारु-जुआमे फेकैत छह, जँ ओहि टाकाकेँ आइ बैंकमे जमा कएने रहितह तँ बुझह जे आइ कतेक टाका भेल रहैत । एतेक जे पिबैत छी गोटेक दिन अहाँ अपटी खेतमे मरि जाएब । कमसँ कम दसो बरखसँ अहाँ मद्यपान कए रहल छी । टाकाकेँ पानि जेँका बहा रहल छी । कोनो गलत कही तँ बाजू ?

गिरिधर : काकाजी, गप तँ अहाँ बड़ चोटगर बजलहुँ । एक दिनमे हम कमसँ कम एकटा कड़कड़ौआ नोटकेँ बोतलमे धए अवश्य पीबि जाइत छी ।

सजेन्द्र : आब अहाँ जोड़िकेँ बताउ एक बरखमे कतेक भेल ?

गिरिधर : एक बरखमे ? हुँ... एक बरखमे तीन सए पैंसठि टा दिन होइत अछि... माने तीन सए पैंसठि टा कड़कड़ौआ नोट, ओह मैथमेटिक्स नहि मिलैत अछि... एक घोँट लेबए दिअ (**एक घोँट लैत**) काकाजी, हँ, हिसाब मिलि गेल । तीन सए पैंसठि टा सए टाकाक नोट भेल अर्थात् छत्तीस हजार पाँच सए नगद कैश टाका । बाप रे बाप ! बहुत रास पीबि गेलहुँ ।

सजेन्द्र : ई तँ मात्र एक सालक भेल । आब अहाँ दस सालक जोड़ि केँ देखिऔक कतेक होइत अछि ?

गिरिधर : सेहो जोड़िकेँ कहि दैत छी । एक घोँट आरो मारए दिअ । काकाजी ई घोँट चलैत रहत, तँ ई हिसाबो परफेक्ट मिलैत रहत । घोँट बन्द... तँ हिसाबो बन्द... (**घोँट लैत**) हँ तँ एक सालमे भेल छत्तीस हजार पाँच सए तँ दस सालमे दस गुणाक एफैक्ट अछि... हुँ एकदम करेक्ट । अहाँकेँ भेल तीन लाख पैंसठि हजार... ।

सजेन्द्र : सोलह आना सही ।

गिरिधर : माने हम जँ नहि पिबितहुँ तँ हम निश्चित रूपसँ लखपति भेल रहितहुँ ।

सजेन्द्र : अरे बेटा तीन लाख पैंसठि हजार टाका अहाँकेँ बैंक बैलेंस रहैत । एकर कोनो ठेकाना रहल ?

गिरिधर : नहि, एकदम ठीक कहैत छी माइ डियर काकाजी । मगर जहिना हम अहाँकेँ एक्कहि निसासमे सभटा प्रश्नक ठीक-ठीक उत्तर देलहुँ । ओहिना अहूँकेँ हमर प्रश्नक उत्तर आब देबए पड़त ।

सजेन्द्र : हँ, हँ किएक नहि, अहाँ तँ आइ बड़ बुझनुक जेकाँ गप-सप करैत छी । जहिना सुन्नर ढंगसँ हम अहाँकेँ आइ बुझएलहुँ तहिना आइ अहाँ सभटा बुझि गेलहुँ । अरे आइ-काल्हि बुझाबएबला लोको कहाँ रहि गेल अछि । लगैत अछि आब अहाँ अवश्य पिनाइ छोड़ि देब । भेल ने आइ अपन करतूति पर पश्चाताप ।

गिरिधर : बहुत पछताबक (हाथक इशारासँ) एतेक रास पछताबक पर
आब कए की सकैत छी ? (बात बदलि) काकाजी, अहाँ
कहिओ तारी-दारु नहि पीने होएब ?

सजेन्द्र : राम-राम-राम । की बाजि रहल छह ।

गिरिधर : तखन तँ अहाँकेँ तीन लाख पेंसठि हजारक बैंक बैलेन्स अवश
होएत ? हा... हा... हा... किएक चुप छी ? अरे अहाँ तँ गामे-गामे
घुमि-घुमिकेँ महिसक पैकारीमे पुष्टकेँ दलाली खाइत छी आओ
पीबो नहि करैत छी । हम तँ पिबैत छी तेँ हमरा बैंक बैलेन्स नहि
अछि, किन्तु अहाँ किएक घन्टी डोलबैत छी ?

सजेन्द्र : (**खौंझाइत**) चुप... चाप रह... ।

गिरिधर : आब खौंझाइत किएक छी ? काका जी, किछु कए लिअ ई टाका
नहि अछि रूकैबला । काकाजी, टाकाकेँ पाँखि होइत छैक ।
उड़बे करत, आओर पकड़निहार पकड़बे करत ।

सजेन्द्र : एतेक कालसँ सुग्गा-मैना जकाँ ककरा बुझएलहुँ ! अरे हम नहि
पिबैत छी तँ हमर शरीर देखैत छह अहूँ उमेरमे हम कतेक कसग
आओर निरोग निठाह छी । तोहर शरीर तँ लगैत छह... खैर हम
बात एखनहुँ मानि ई सभ छोड़ि दहक ।

गिरिधर : काकाजी हमहूँ निरोग-निठाह छी । हमरो ताकति देखबैक
देखिऔक...

**(गिरिधर दण्ड-घीचि अपन ताकति देखबए चाहैत अछि परन्
बैसकी कए उठल नहि होइत छैक जाहि पर सजेन्द्र हँसैत छथि ।**

गिरिधर : छोड़ि देब । अवश्य छोड़ि देब । मुदा दुख नहि करब काकाज
एकटा गप कहैत छी, पीलासँ लोक निश्चित रूपसँ मरि जाइ
अछि । हम तँ मरबे करब किन्तु काकाजी अहाँ तँ नहि पिबैत छी
अहाँक शरीरो एकदम हट्ठा-कट्टा अछि । अहाँ तँ कहिओ न
मरब, अजर-अमर होएब । की नहि ?

सजेन्द्र : ओफ्फ... । तोरासँ गप कएनाइ तँ... अरे ई जिअब मरब तँ संसार
परिपाटी छैक... रीति छैक ।

गिरिधर : काकाजी, ओ यमराज नहि छोड़एबला छथि । पीब तैओ मरब, नहि
पीब तैओ मरब । तखन फेर खाए-पीबीकेँ किएक नहि मरब !
काकाजी हमरा क्षमा करब, हमरा पास समय एकदम नहि अछि ।
हम चलैत छी, हमर संगी-साथी सभ हमर प्रतिक्षामे होएत । हम
चलैत छी बाइ-बाइ । गुड बाइ... । गुड बाइ सी यू... ये दोस्ती हम
नहीं तोड़ेंगे, तोड़ेंगे दम मगर...

**(गीत गबैत-गबैत बाहरक लेल प्रस्थान करैत अछि । सजेन्द्र दुखी
आओर आश्चर्यक मुद्रामे ठाढ़ रहैत छथि कि तखनहि भीतर सँ
कृष्णचन्द्र प्रतापक प्रवेश होइत अछि ।)**

कृष्णचन्द्र : सजेन्द्र भाइ, अहाँ कखन अएलहुँ ?

सजेन्द्र : प्रणाम प्रताप भाइ ! अरे हम कखन ने अएलहुँ ? कखन सँ अहाँक
प्रतीक्षा कए रहल छी । ओ कि कहैत छैक ओ हाँ मोर्लिंगवाककेँ
लेल आइ नहि निकललहुँ ?

कृष्णचन्द्र : (**दुखी भावमे**) की मोर्निंग वाकक लेल निकलब सजेन्द्र भाइ ।
हमरा तँ भोरहरोमे अन्हारे-अन्हार देखना जाइत अछि ।

सजेन्द्र : ई कि कहि रहल छी प्रताप भाइ ?

कृष्णचन्द्र : एकदम सत्य कहि रहल छी । भाइ अहाँ तँ नीक जकाँ जनैत छी ।
ई ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रताप युद्धक भूमिमे कहिओ नहि डराएल,
आ ने कहिओ अपन पीठ देखौलक । परंच आइ हमरा अपनहि घर
भयाओन लगैत अछि । सुनैत छलहुँ जे कुसन्तानक सन्ताप सभसँ
पैघ होइत छैक । जाहिमे आइ हमही फँसि गेलहुँ ।

सजेन्द्र : हँ प्रताप भाइ, ई तँ बड़का चिन्ताक विषय थिक । गिरिधर
दिनानुदिन बरबादहि भेल चलि जा रहल अछि । एकर किछु
निवारण कएल जएबाक चाही ।

कृष्णचन्द्र : की निवारण करु, सभटा कएकेँ थाकि चुकल छी । कखनहुँकेँ
मोन विचलित भेला पर घर छोड़ि, पराइक इच्छा करैत रहैत अछि ।

सजेन्द्र : प्रताप भाइ, ई सभ बात मोनसँ निकालिकेँ राखू ।

कृष्णचन्द्र : अहाँकेँ स्मरण अछि सजेन्द्र भाइ, अपन गिरिधर पढ़बा-लिखबामे कतेक तेज छल ! मोन अछि ओ प्रत्येक क्लासमे फर्स्ट करैत छल। कोनाकेँ ओकरामे एहितरहक "हठात् परिवर्तन" आबि गेल, से नहि जानि ।

सजेन्द्र : प्रताप भाइ, हमर विचार अछि गिरिधरक बिआह कराए दिऔ ।

कृष्णचन्द्र : विवाह ? ई की कहि रहल छी सजेन्द्र भाइ ? केँ एहन आन्हर बाप अपन बेटीक हाथ एहि दारुखोरक हाथमे देत ? नहि-नहि, ई नहि होएत । हम ककरो बेटीक जिनगीक संगे खेलबाड़ नहि कए सकैत छी ।

सजेन्द्र : प्रताप भाइ, ई सभ अहाँक उदारता थिक । मुदा एम्हर गिरिधरक जिनगीक सवाल अछि । तेँ ई सभ उदारता छोड़ू आओर हम जे कहैत छी से काज करु । कोनो नीक कुलशीलक कन्या देखि गिरिधरक जतेक शीघ्र भए सकएह बिआह करा दिऔक ।

(सरस्वतीक ट्रे मे चाह-बिस्कुट इत्यादि लए प्रवेश । टेबुल पर राखि गिरिधरक ऐँठ-कूठ थारीकेँ उठा नीचाँमे रखैत...)

सरस्वती : बौआ एकदम ठीक कहैत छथि । की कहू बौआ, हम आइसँ ई बात कहैत छिअन्हि ! किन्तु एहि घरमे हमर के सुनैत अछि !

(दुनू गोटा चाह लए पीबैत छथि)

कृष्णचन्द्र : अहाँ तँ हमर सभटा गपकेँ उनटा बुझैत छी । विवाहक बाद ओकर परिवार जे एहि घरमे आओत तकर देखभाल के करत ? ओ तँ सदिखन दारुक निसाँमे झुमैत रहैत अछि । कहूँ हमरा परिवारमे एकटा दोसरे कुफ्फा जँ ठार भेल, तखन की होएत ।

सजेन्द्र : प्रताप भाइ, एहन किछु नहि होएत । हमर बात मानू आओर छोड़ू नाकर-नुकुर करब । गिरिधरक बिआह तँ कराएकेँ देखिऔक । एहन कतेको ठाम देखल गेलैक अछि, जे बिआहक बाद नीक कनिआँक पाएर अथवा ओकर आचार-बिचार, चालि-चलनसँ बुड़िआएल, अबण्ड छौंड़ा सभ सुधरि गेलए । एहिमे आब बेसी देरी जुनि करू । जेठ बेटा गोपालकेँ तार दए बजाए लिअ । हमर अनुरोध अछि गिरिधरक भविष्यक हेतु एकबेर इहो कएकेँ देखिऔक ।

कृष्णचन्द्र : बेस । अहाँ सभक जखन इएह बिचार अछि तखन इहो कएकेँ देखैत छी ।

सजेन्द्र : हँ, ई भेल ने एकटा ब्रिगेडियरक फैसला । अच्छा प्रताप भाइ एखन हम चलैत छी, कने भुस्सी उड़िअएबाक अछि ।

कृष्णचन्द्र : बेस... मुदा जल्दी आएब ।

(सजेन्द्रक प्रस्थान होइत अछि । रोहणक आँखि मिरैत प्रवेश । कृष्णचन्द्र सोच-विचारमे लीन छथि ।)

रोहण : गुड मौर्निङ्ग दादाजी ! **(कृष्णचन्द्र नहि सुनैत छथि)** गुड मौर्निङ्ग दादाजी !!

कृष्णचन्द्र : **(भक टुटैत छन्हि)** ओ... हो रोहण जी, निन टूटि गेलैक ! गुड मौर्निङ्ग माइ स्वीट-स्वीट हर्ट-गुड मौर्निङ्ग... ।

(कृष्णचन्द्र प्रताप रोहणकेँ भरि पाँजमे धरैत कोड़ामे उठा लैत छथि । सरस्वती गिरिधरक ऐँठ-कूठ थारी लए प्रस्थानक मुद्रा बनबैत छथि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : तेसर

(मंच व्यवस्था पूर्ववत । समय रातुक पहर । कमाण्डर गोपालचन्द्र प्रताप बाहरसँ आबि चुकल अछि । सोफा पर बैसि रोहणक संग गप-सप कए रहल अछि ।)

गोपाल : तखन बटुक, पढ़ाइ-लिखाइ कोना की चलैत छैक ? स्कूलो-तिस्कूलो जाइत छी की खाली बदमाशिए करैत छी ?

रोहण : पापा जी, हम स्कूल रोज जाइत छी । अहाँकेँ बुझल अछि ? दादाजी हमरा रोज एक रुपैआ दैत छथि। स्कूल नहि जाएब तँ दादाजी एक रुपैआ नहि देताह ।

गोपाल : **(हँसैत)** ओ तँ, तेँ अहाँ स्कूल नित रोज जाइत छी ? मुदा एक रुपैआ लएकेँ अहाँ की करैत छी ? लन्च बक्स तँ मम्मी जी दैते होएती ।

रोहण : ऑफकोर्स ! पापाजी, पता अछि, हम पाइ जमा करबाक लेल चुकड़ी किनने छी । सभटा पाइ हम ओही मे खसबैत छी । पापा जी, टेलीविजनमे विज्ञापन दैत अछि पैसे सेभ कीजिये ।

गोपाल : अरे तखन तँ अहाँ बड़का बुधिआर छी ! किन्तु अहाँक चुकड़ी फुटतैक कहिआ ?

रोहण : दुर्गा पूजामे । जखन मेला घूमए जाएब तखन फोड़ब । पापाजी, अहाँ जएबाकाल जे पाइ देब, सेहो हम चुकड़िएमे खसएबैक ।

गोपाल : ओ तँ अहाँकेँ पहिनेसँ बुझल अछि जे हम जएबाकाल अहाँकेँ पाइ देब ।

रोहण : श्योर ! सभक पापा जएबाकाल पाइ दैत छथिन्ह । पापाजी, ई बात छोड़ू एकटा बात पुछू ?

गोपाल : आब जल्दीसँ पूछि गप-सप समाप्त करू, मम्मी आउति तँ डाँट सुनब ।

रोहण : प्लीज पापाजी, कनेकाल आरो गप-सप करू ने । दादा जी कहैत छथि, अहाँ सेनामे कमाण्डर छी, कमाण्डर बनि अहाँ की सभ करैत छी पापा जी ?

गोपाल : हम देशक दुश्मन सभकेँ बन्दूकक निसाना लगा ठाँइ-ठाँइ गोली चला सोझे यमलोक पहुँचा दैत छी ।

रोहण : पापाजी, कमाण्डर कोना बनैत अछि ?

गोपाल : किएक ?

रोहण : नम्हर होएब तँ हमहूँ कमाण्डर बनब । प्लीज पापाजी कहू ने ।

गोपाल : जखन पढ़ि लिखिकेँ अहूँ नम्हर होएब तखन अहूँ देशक सिपाही बनि देशक सेवा करब । चलू आब अहाँ सूति रहू । भिनसर दादाजीक संग वाकिङ्गमे जएबाक अछि ।

रोहण : नहि, प्लीज माइ स्वीट पापा ! कनेक काल आरो गप करू ने । हमरा संगे केओ ठीकसँ गप नहि करैत अछि । मात्र एकटा दादाजीकेँ छोड़ि । काकाजी तँ नित रोज दारू पीबिकेँ अबैत छथि आओर सभकेँ गारि पढ़ैत छथिन ।

रंजनी : (प्रवेश करैत) रोहण, एखनधरि अहाँ जागले छी ? दिन-दिन गप्पी भेल चलि जा रहल छी । चलू आराम करू ।

रोहण : मम्मी ! कनेक काल आरो... ।

रंजनी : नहि आब भिनसरमे गप हएतैक । चलू भीतर जाउ ।

रोहण : (जाइत) गुड नाइट पापा ! गुड नाइट मम्मी !! **(दुनू गोटए रोहणक अभिवादन स्वीकार करैत छथि। रोहणक प्रस्थान)**

रंजनी : आओर कतेकखन बैसब ? खएनाइ ठण्ढ़ाइ रहल अछि ।

गोपाल : ठण्ढाइ दिऔक । एखन तक गिरिधर नहि आएल अछि ?

रंजनी : हुनका लेल तँ एखन साँझे पड़लए ।

गोपाल : बेस, बाबूजी भोजन कएलन्हि ?

रंजनी : आब तँ बाबूजी खाएकेँ उठताह । कहलन्हि हेँ, आब अहूँकेँ खाए लेबाक लेल ।

गोपाल : नहि-नहि, एखन नहि गिरिधरक अएलाक बादहि खाएब । अहाँकेँ जँ बेसी भूख लागल अछि तँ अहाँ खाए सकैत छी । शरीर तँ तेतड़िक पात सन लागि रहल अछि । बुझना जाइत अछि अन्न-पानिसँ भेँट नहि होइत अछि ।

रंजनी : आब मसखरी छोड़ू, हमरा तँ असगर खएबाक आदति पड़ि गेल अछि । मुदा देशक कर्मठ सिपाहीकेँ अपन स्त्रीसँ कोन मतलब ? हुनका तँ देशक सिबाए आर किछु सोहाइते नहि छन्हि !

(भीतरसँ कृष्णचन्द्र प्रतापक खखसबाक स्वर अबैत अछि ।)

रंजनी : भरिसक बाबूजी अबैत छथि । बेडरूमं चलू, ओतए खुल्लम-खुल्ला गप-सप करब ।

(कृष्णचन्द्र प्रतापक पुनः खखसैत प्रवेश । रंजनी लजाइत-धखाइत भीतर दिस चलि जाइत अछि ।)

गोपाल : आउ बाबूजी, बैसू ।

कृष्णाचन्द्र : (सोफा पर बैसैत) हठात् तार जे पठेलहुँ से किछु विशेष प्रयोजन। आब हमर बएस भेल । आओर दोसर गप जे गिरिधर दिनानुदिन बहसले चलि जाए रहल अछि । परेसान कएकेँ हमरा सभकेँ राखि देलक अछि । तेँ एकटा ठोस निर्णय लेलहुँ अछि । बस अहाँक सहमतिक आवश्यकता अछि । संकेत प्रायः बूझिगेल होएब। ओना कन्या बड़ सुन्नर छैक । कुल-खानदान सेहो बुझल-गमल अछि । एहि सभ कारणे एतेक हड़बड़ाएकेँ टेलीग्राम कए बजा लेलहुँ ।

गोपाल : सभटा गप रंजनी कहलथि बाबूजी ! सुनि बहुत तकलीफ भेल । देशक मान-सम्मानकेँ बचाबएबला ई परिवार आइ स्वयं अपन मान-सम्मान गमाए रहल अछि । नहि जानि एहि खानदानमे एकटा काहिल, लफंगा, धूर्त आओर कुलबोरन कतए सँ आबि गेल ।

कृष्णाचन्द्र : बेटा, जखन मनुक्खक गलत सङ्गति पकड़ाइत अछि तँ ओहि मे सँ बाहर निकलनाइ बहुत कठिन भए जाइत अछि । सभ आब एक दिसाहे कहैत अछि जे गिरिधरक जल्दीसँ विवाह करा दिऔक । किन्तु एकरो तँ सभटा दायित्व अँही ऊपरमे रहत ।

गोपाल : माए सेहो कहलक । रंजनीक सेहो विचार छन्हि । आओर हमरो मोन सएह कहैत अछि । बाबूजी, गिरिधरकेँ जाहिसँ नीक होएत, सएह करू । हमर पूर्ण सहमति अछि ।

(गिरिधरक हाथमे दारुक बोतल लए निसाँमे मत्त भेल प्रवेश होइत अछि । ई देखि गोपाल अक-बक रहि जाइत अछि । सरस्वती घरक मोख लग आबि ठाढ़ भए सभटा देखैत छथि)

गिरिधर : (गीत गबैत) मेरे नयना सावन-भादो फिर भी मेरा मन प्यासा... हैलो माइ डियर, फादर हाउ आर यू ? अहाँ अपन समाचार नहि कहब तँ हमरे समाचार सुनि लिअ, फर्स्ट ऑफ ऑल आइ एम गिरिधर ! गिरिधरचन्द्र प्रताप । सन ऑफ रिटायर्ड ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रताप । आइ एम फाइन बाबूजी ! भेरी-भेरी फाइन । (गोपाल केँ देखि) ओ भैया ? अहाँ कखन अएलहुँ ? गोड़ लगैत छी । की हाल-चाल थिक भ्राताश्री ?

गोपाल : (गम्भीर मुद्रामे) गिरिधर !

गिरिधर : आइ एम सॉरी भाइ साहेब । हमरा आबएमे किछु विलम्ब भेल । क्षमा करब हमरा । हँ, तँ बाबूजी हम की कहैत छलहुँ ?

गोपाल : गिरिधर अहाँ होसमे तँ छी ? बाबूजीक संग एहि तरहेँ बात करैत अहाँकेँ लाज-संकोच नहि होइत अछि ? अहाँ तँ बाबूजीक सोझामे मुँह उठाकेँ बात तक नहि करैत छलहुँ ।

गिरिधर : नहि करैत छलहुँ । मुदा आब करैत छी । बाबूजी । हाइ रे बाबूजी ! जेहन बाबूजी ने... अच्छा छोड़ू एहि बातकेँ । भाइ साहेब हम मुम्बइ फिल्म इन्डस्ट्रीजमे एकटा चिट्ठी लिखलहुँ अछि । लिखलहुँ अछि... आदरणीय फिलम निर्माता वृन्द ! अहाँ सभ बड़ न० वन लएकेँ फिल्म सभ बनौलहुँ । फौर एग्जाम्पुल– कुली न० वन, बीवी न० वन, ऑन्टी न० वन, बेटी न० वन बगैरह-बगैरह... किन्तु हमहूँ एकटा नाम दैत छी । फिल्म बनाउ निश्चय सुपर हिट होएत । आओर ओ नाम अछि– ''बुड़िबक बाप न० वन'' । जँ अहाँ लोकनि नहि बनबाएब तँ हमरा शीघ्र सूचना देब । हम स्वयं बनबाएब, अपन हिस्साक खेत-पथार बेचिकेँ बनबाएब । अण्डर स्टेण्ड माइ डियर बुड़िबक बाप न० वन ।

गोपाल : (तमसाइत) गिरिधर अहाँ भीतर जाउ– अहाँ एखन एकदम होस-हबासमे नहि छी ।

गिरिधर : हम एकदम होस-हबासमे छी भैया । मुदा अहाँक बात मानैत छी, हम जाइत छी भैया ! अहाँ अएलहुँ, हम बहुत प्रसन्न भेलहुँ । एतेक प्रसन्न की, की कहू, आब भिनसर गप-सप करब । एखन हमरो मोन किछु गड़बड़ बुझाइत अछि । चलैत छी एखन । एँ...।

गोपाल : हँ हँ जाउ... ।

गिरिधर : **(घरक मोख लगसँ घुमैत)** अच्छा भैया, एकटा बात, एहिबेर कारगिलक लड़ाइमे अहाँ कतेक दुश्मन सभकेँ बन्दुकसँ उड़एलहुँ ? हमरो एकटा दुश्मन अछि, ओकरा खतम नहि कए सकैत छी अहाँ ? आओर ओ दुश्मन अछि हमर अभागल बाप । आइ मीन बुड़िबक बाप न० वन ।

गोपाल : ओह गिरिधर... अहाँ एहि ठामसँ जाएब की नहि ?

गिरिधर : सॉरी भैया, चलैत छी– गुड नाइट, गुड नाइट ! गुड नाइट एवरी बडी (**गीत गबैत प्रस्थान । किछु क्षण मंच स्तब्ध ।**)

सरस्वती : (**प्रवेश कए**) की कहिअ बच्चा । ई गारि-सराप तँ हिनका लेल कोनो नव बात नहि छनि । सभकेँ सुनबाक अभ्यास पड़ि गेल अछि । हिनका सँ ओ सदिखन रुष्ट रहैत अछि । ओकरा सदिखन टाका-पैसा चाही । ई रोज कतएसँ देथिन आओर किएक देथिन । तेँ ओजह सँ ओ हिनका पर एतेक खौंझाएल रहैत अछि ।

कृष्णचन्द्र : ओफ्फ ! आब ई सभ हमरा एकदम बर्दाश्त नहि होइत अछि गोपाल ! ई कुलनाशक हमर सभटा मान-प्रतिष्ठाकेँ धोएकेँ चाटि गेल। हमरा बेरबाद कए देलक गोपाल ! हमरा बेरबाद कए देलक !

(हठात् कृष्णचन्द्र प्रतापकेँ रक्त चाप बहुत तीव्र भए जाइत छनि । गोपाल बाबूजी ! बाबूजी ! कहैत कृष्णचन्द्रकेँ धरैत अछि । सरस्वती सेहो धरैत छथि । रंजनी भितरसँ दबाइक सीसी लए दौड़ैत प्रवेश करैत अछि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : चारिम

(मंच व्यवस्था पूर्ववत मुदा सजाओल अछि । वातावरणमे एकटा आनन्दक आभास बुझना जाइछ । रंजनी आन दिनक अपेक्षा नीक साड़ी एवं गहना-गुड़िया पहिर एहि घरसँ ओहि घर अत्यन्त प्रसन्न मुद्रामे जाइत-अबैत देखाइ पड़ैत अछि । नेपथ्यसँ मिथिलाक परम्परागत रीतिक अनुसार गोसाउनिक गीत नारीक कण्ठ स्वर द्वारा गाओल जाइत अछि । गीतक स्वर मंच पर ओहिना आबि रहल अछि । एहि सँ ई ज्ञात होइत अछि जे गिरिधरक विवाहक पूर्व तैयारी चलि रहल अछि । नेपथ्यसँ कखनहुँकेँ कृष्ण चन्द्र प्रतापक स्वर सेहो अबैत अछि– अरे आब कथीक देरी कए रहल अछि गोपाल... गोपाल... कनेक सजेन्द्र भाइ आओर मन्टुन काकाकेँ देखहुन तँ । गोपालक स्वर सेहो सुनाइ दैत अछि– ठीक छै बाबूजी... रंजनी... रंजनी अहाँ कतए गेलहुँ ?)

रंजनी : (**साड़ीकेँ सरिआबैत**) आएँ, इएह अएलहुँ, एहि घरमे कोनोटा काज शान्तिपूर्वक नहि होएत अछि । कनिएमे हंगामा मचि जाइत अछि । हड़बड़िआ सभ... (**रंजनी हड़बड़ाएकेँ भीतर जाइत अछि आओर तुरन्ते फेर मंच पर आपस अबैत अछि ।**)

रंजनी : (**स्वतः**) हे भगवान ! एहि घरकेँ शान्तिसँ भरल बनएबाक लेल अहाँसँ हम भीख माँगि रहल छी । हमर देओरकेँ सुबुद्धि दिअनु । आइ एहि घरमे ककरो कोनो तरहक कष्ट नहि अछि । मात्र एकटा हमर देओर लएकेँ सभ चिन्तित रहैत छथि । आइ हमर देओर बिआह कए नव जिनगीमे प्रवेश करताह हुनका भीतर ज्ञानक एहन प्रकाश आओर सुमति भरि देबनि, जाहिसँ पुनः एकटा नव सृष्टिक निर्माण भए सकत ।

(रोहणक हड़बड़ाएल प्रवेश । ओकरा माथ पर ललका पाग अछि ।)

रोहण : मम्मी...मम्मी... देखू हमरा, काकाजी हमरा पाग पहिरा देलनि । हम कतेक सुन्दर लगैत छी ?

(रंजनी रोहणक माथसँ पाग लेबा लेल चेष्टा करैत अछि ।)

रंजनी : रोहण-रोहण, ई काकाजीकेँ जल्दीसँ दए अबहुन । काकाजी ई पहिरकेँ बिआह करए जएथिन । दिअ हमरा पाग...

रोहण : नहि, हम नहि देब, ई हमरा काकाजी देलन्हि हेँ ।

रंजनी : रोहण, रोहण, बदमासी जुनि करू, दैत छी कि पापाजीकेँ बजबिअनि ?

रोहण : (**ठमकिकेँ माथक पाग उतारि रंजनीकेँ दैत**) मम्मी हमरो बिआह कराए दिअ ने नीक लगै छै ।

रंजनी : (**हँसैत कोरामे रोहण के उठा**) अवश्य अहूँकेँ बिआह करा देब, परन्तु जखन अहूँ खूब पढ़ि-लिखिकेँ नम्हर ऑफिसर होएब तखन कराएब ।

(नेपथ्यसँ चुमाओन गीतक मद्धिम स्वर जोरसँ होमए लगैत अछि । सहनाइक स्वर सेहो जोर पकड़ैत अछि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : पाँचम

(**कृष्णचन्द्र प्रतापक बैसार गृह । अर्थात् पूर्ववत मंच व्यवस्था । गोपाल कमान्डरक वर्दीमे सोफा पर बैसल अछि, समीपमे नव विवाहितक परिधानमे गिरिधर सेहो गमार जकाँ बैसल अछि । गोपालक समीप एकटा ब्रीफकेस राखल अछि । गोपाल गिरिधरकेँ बुझाए रहल अछि ।**)

गोपाल : गिरिधर, हमरा गेलाक बाद फेर गाओले गीत जुनि गाबए लागब । ई सभ कएलासँ मात्र अपजस आओर असफलता भेटैत छैक । अहाँ जे रास्ता धएने छलहुँ ओहि पर थूकल जाइत छैक । खैर समय रहैत पथक परिवर्तन कएलहुँ ई बहुत सुखद आओर आनन्दक बात । आब अहूँ एकटा परिवारबला भेलहुँ । अहूँक नबका जीवन आब शुरू भेल । नव दाम्पत्यक सुखक संग एकटा दायित्व सेहो भेटलए । अपन कर्तव्यसँ कखनहुँ विश्रान्त नहि होएब से हमर आग्रह । जाउ, एकटा रिक्शा बजौने आउ । (**गिरिधर बाहर दिस प्रस्थान करैत अछि । संगहि भीतरसँ सरस्वती आओर रंजनीक प्रवेश होइत अछि ।**)

सरस्वती : बच्चा, आइ नहि जाएब से नहि होएत ? दू-चारि दिनक बाद जैतह । छोड़ि दहक आब ई नौकरी । एहन काज कएकेँ कोन लाभ-जाहिमे सरिआएकेँ दसो दिन नहि रहि सकैत छह । (**सरस्वती के आँखिमे नोर भरि अबैत अछि ।**)

गोपाल : माए, अहाँक आँखि मे नोर ? तखन तँ आइ हम निश्चिते नहि जाएब । छोड़ि देबैक एहि काजकेँ । घरहिमे बैसिकेँ खाली अड्डा मारब । हा-हा-हा, माए तोहर आशीर्वादसँ जे सौभाग्य आइ हमरा भेटलहेँ से सभकेँ नहि भेटैत छैक । देखू एहि वर्दीमे हम कतेक सुन्दर लागि रहल छी ? तोहर जेठका बेटा कमान्डर गोपाल चन्द्र प्रताप ।

(**सरस्वतीक मुँहपर कनेक हँसी आबि जाइत अछि । किन्तु रंजनी उदास रहैत अछि । गोपाल समीप आबि ।**) अहाँ किएक एतेक उदास छी ? हम तँ पुनः दुर्गापूजामे आबिए रहल छी ।

रंजनी : हँ अहाँ कहन आएब से हम बुझैत छी । आशा दए के जाइत छी आओर निराश कए दैत छी ।

गोपाल : एहि बेर देखब हम कोनो हालतमे अएबे टा करब । "चन्द्र टरे सूरज टरे, टरे जगत व्यवहार, पै दृढ़ कमान्डर गोपाल चन्द्रके टरे ना सत्य विचार ।

(**रंजनी आओर गोपाल ठहाका मारि हँसैत अछि । तखनहि बाहरसँ कृष्णचन्द्र प्रताप आओर रोहण मोर्निङ्गवाक कए प्रवेश करैत अछि ।**)

कृष्णचन्द्र : की गोपाल एखनहि जा रहल छह ?

गोपाल : हँ बाबूजी, हमर कारगिलसँ सियाचीन ट्रान्सफरक सूचना देल गेल हैँ । रातिमे हमर वरिष्ठ अधिकारीक फोन आएल छल । तत्काल ज्वाइन करबाक आदेश देल गेल अछि ।

कृष्णचन्द्र : तखन तँ अहाँकेँ एखनहि निकलए पड़त ।

गोपाल : हँ बाबूजी, हम एकदम रेडी छी । रोहण आओर अहाँक अएबाक प्रतीक्षामे छलहुँ ।

कृष्णचन्द्र : वेरी गुड !

रोहण : (**कनैत पापाकेँ घेरैत**) नहि पापा हम अहाँकेँ नहि जाए देब ।

कृष्णचन्द्र : (**रोहणकेँ अपना दिस आनैत**) अरे रे रे रे हमर बहादुर पोता किएक कानए लगलहुँ ? अरे एहिमे कनबाक कोन क़ाज ? पापाजी जाइत छथि तँ जाइ दिअनु कोनो चिन्ताक गप नहि ।

रोहण : दादाजी, हमरा सभटा पता अछि । पापाजीकेँ अपना सभसँ कोनो मतलब नहि छन्हि । हुनका तँ मात्र अपन कन्टरी सँ मतलब छन्हि । दादाजी, हमरा किताबमे देशक वीर सिपाही सभक कहानी लिखल अछि । पता अछि अहाँकेँ, सेनामे जे काज करेत अछि ओ दुश्मनसँ लड़ाइ करैत-करैत वीरगतिकेँ प्राप्त होइत अछि । ओ शहीद होइत अछि । दादाजी प्लीज पापाजीकेँ रोकि लिअन्हुने ।

गोपाल : (**रोहणकेँ कोरामे लैत**) रोहण बाबू, एहिमे कनबाक कोन काज ? अहाँकेँ तँ पता अछि अहाँक पापा देशक सिपाही छथि । दुश्मन हमरा नहि मारि सकत । किएक तँ हमरा पास बहुत रास

बन्दूक-गोली आओर तोप अछि । आहिरेबा, हम तँ अहाँ
चुकरीमे पाइ खसएनाइ बिसरिये गेल रही । (जेबीसँ पाइ निकालि
दैत) ई लिअ अपन पाइ, एकरा चुकरीमे खसा देबैक आर ई
चुकरी दुर्गापूजामे फोरब, जखन हम गाम आएब । ओ०के० ? च
आब हँसू... ।

(गोपाल रोहणके पेटमे गुदगुदी लगबैत अछि । रोहण खूब जोड़ सँ हँसए लगैत अछि । सङ्ग-सङ्ग सभकेँ हँसी लगैत अछि । तखनहि बाहर सँ गिरिधरक प्रवेश होइत अछि ।)

गिरिधर : भैया रिक्शा आबि गेल, चलू ।

(गोपाल रोहणकेँ कोरासँ उतारि, जएबाक लेल उद्धत होइत अछि । कृष्णाचन्द्र आओर सरस्वतीकेँ पाएर छुबैत अछि । रंजनी सेहो पहिने गोपालकेँ फेर कृष्णचन्द्र आओर सरस्वतीकेँ पाएर छुबैत अछि । गिरधर ब्रिफकेश उठबैत, बाहरक गेट तक बढ़ैत अछि । गोपालक जाएक मुद्रा बनैत अछि । सरस्वती आओर रंजनी सिसकि-सिसकि कानए लगैत अछि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : छठम

(शालिनीक कोहबर घर । शालिनी चतुर्थी रातिक सेज पर (जे ओकर सोहागक पहिल राति सेहो छी ।) सजल अपन प्रियतम गिरिधरक प्रतीक्षा मे आतुर होइत बाट निहारि रहल अछि । गिरिधरक नित्य रोजक व्यसनक संग हाथमे दारुक बोतल लए प्रवेश होइत अछि । शालिनी आहट सुनितहि नम्हर घोघ तानि लैत अछि ।)

गिरिधर : **(गबैत गबैत प्रवेश)** कोहबर घर अएलहुँ... पिबैते... पिबैते... जिनगीक नव रस लेबै पिबैते... पिबैते कोहबर घर अएलहुँ पिबैते, पिबैते... हा...हा... हा हए नम्हर घोघबाली । हम सभटा जनैत छी । हएब अहाँ अवश्य मृगनयनी ! पिकबयनी !! उठाउ कने अपन घोघबला नूआ आओर देखाउ अपन गोर रत-रत धूआ (घोघ **उठाकए)** आहा-हा हाए रे अहाँक ई अनुपम सौन्दर्य । हाए रे अहाँक ई छिड़िआएल केश राशिक मध्यमे ओझराएल मुखमण्डल ।

एना प्रतीत होइत अछि जेना चान अन्हरिआक वक्षस्थलकेँ चिरैत मृत्युभवनकेँ आलोकित करैत होए । हाए रे ई चान सन स्वरूप । ना, आब नहि देखब चानकेँ । चान तँ स्वयं मेघसँ उतरि हमरा समक्ष बैसल अछि । आहा-हा-आओर ताहिपरसँ चानक मुखाकृति पर सोहरल अछि सुन्दर-सुन्दर गहना । बीत जाएत आब एहि शीतल छाँहमे बारहो महिना !! हा हा हा... भेटि गेल, जकरहि द्वापर युगसँ कलयुग तक खोज छल, सएह भेटि गेल ।

शालिनी : **(मुँह भिनकाबैत)** छीआ-छीआ, अहाँ दारू पीने छी ? अहाँ निशाँपान करैत छी । प्लीज, हमरा लग अएबाक प्रयास जुनि करब । हमरा शराबी-जुआरीसँ बहुत घृणा होइत अछि ।

गिरिधर : अच्छा तँ अहाँकेँ शराबी-जुआरीसँ घृणा होइत अछि ! ई तँ हमरा बुझले नहि छल । चलू फेँकि दैत छी दारूक बोतलकेँ **(फेँकैत)** आब तँ खुशी छी ?

शालिनी : प्लीज, एखन एहिठामसँ चलि जाउ । हमरा एकसर छोड़ि दिअ । **(शालिनी कानए लगैत अछि ।)**

गिरिधर : नो, नेवर..., कानू जुनि ! अरे आइ तँ हमर अहाँक मिलनक पहिल राति थिक । आइ जुनि कानू...

शालिनी : कोना नहि कानू ? अहाँ एकटा शराबी-जुआरी व्यक्ति छी । जाउ एतएसँ प्लीज, हमरा एकान्तमे छोड़ि दिअ ।

गिरिधर : एकान्त ? हा हा हा हा । आइ-काल्हि के नहि पिबैत अछि ? किन्तु जखन अहाँक इएह इच्छा अछि जे हम एहिठामसँ चलि जाइ तँ हम अवश्य चलि जाएब । हम अहाँक ई छोट-छीन मनोरथ अवश्य पूरा करब । हम चलि जाएब । मुदा अहूँके ई बुझबाक चाही... जे हमहू अहाँक समीप किछु प्रयोजनीय काजेसँ आएल छी । नहि, नहि कोनो पैघ काज नहि अछि । खाली अहाँ अपन ई सुन्दर काया-कल्पमे जे सुन्दर-सुन्दर गहना रूपी माया सजौने छी से कृपा कए केँ जतेक शीघ्र होइत अछि, उतारिकेँ हमरा सौंप दिअ ।

शालिनी : हम अहाँक संग बात तक नहि करए चाहैत छी । हमरा संग बहुत बड़का धोखा भेल हेँ । धोखा ! एकटा शराबी-जुआरी, लम्पट आओर बदमाश हमर पति नहि कहाए सकैत अछि ।

गिरिधर : हए घमण्डी जनाना ! तोँ अपन सीमाक उल्लङ्घन कए रहल छेँ। हमरा पास समय बहुत कम अछि। हम कहैत छिऔक अपन शरीरसँ एक-एक टा गहना उतारि, हमरा सौंपि दे, नहि तँ... ।

शालिनी : नहि तँ ? नहि तँ की ? जँ हम अपन गहना अहाँकेँ नहि देब, अहाँ हमरा की करब ?

गिरिधर : की करब ! अच्छा तँ पाएर घरमे धरिते मुँह कैंची जकाँ चलाएब शुरू कए देलही ? एकटा बात कान खोलिकेँ सुनि ले, तोँ हमर धर्मपत्नी छेँ तेँ पत्नी बनि एहि घरमे रह । तोरा हम जे कहबौक से-से करए पड़तौक । कहबौक उठबाक लेल तँ उठए पड़तौक । कहबौक बैसए लेल तँ बैसए पड़तौक जेना-जेना हम तोरा नाच-नचाएब, तेना-तेना तोरा नाचए पड़तौक ।

शालिनी : जँ हम नहि नाची तँ ?

गिरिधर : ओ अच्छा तँ तोँ अपन मोनमाफित काज करबएँ । देख तोँ हमर घरबाली छेँ... घरबाली । बाहरबाली नहि । जँ नहि नचबएँ, तँ लाठीक मारि पड़तौक । फेर तोँ ओहिना-ओहिना करबएँ जेना-जेना हम कहबौक । हमरा लग आब समय एकदम नहि अछि । हमर लालपरी सभ व्याकुलतासँ हमर प्रतीक्षामे हाए-हाए करैत होएत । गहना उतारैत छेँ कि हमरा अपनहिसँ उतारए पड़त ।

शालिनी : नहि, हम किन्नहु नहि गहना उतारिकेँ देब ।

गिरिधर : कोनो बात नहि । हम सेवाक वास्ते अतिशय आतुर छी । चमचिकनी तोँ ओना नहि मानबएँ... (**गिरिधर शालिनीक शरीरक सभटा गहना जबरदस्ती उतारि लैत अछि । शालिनी बिछोह होइत कानए लगैत अछि ।**)

मिसेज शालिनी, हमरा सँ पहिले रातिमे टकराए केँ तोँ नीक काज नहि कएलएँ । एखन हमरासँ बढ़िआँ जकाँ जनतब नहि छौक एहि घरमे ओतबहि होइत छैक जे हम चाहैत छी । छगुनता करबाक कोनो काज नहि । हा हा हा... लालपरी ! हम शीघ्र आबि रहल छिऔक । ई सभटा गहना आब छी तोहर... । लगा देबौक सग देहमे सोनाक मोहर !! हा हा हा...

(**गिरिधर ठहाका मारि-मारि हँसैत अछि । शालिनी हृदयविदीर्ण भए कानए लगैत अछि । गिरिधर प्रस्थानक मुद्रा बनबैत अछि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।**)

मध्यान्तर



दृश्य : सातम

(**कृष्णाचन्द्र प्रतापक बैसार गृह । अर्थात् दृश्य पहिलक मंच व्यवस्था सन । रंजनी रोहणकेँ कोरामे लए बैसल अछि आओर सिसकि-सिसकिकेँ कानि रहल अछि । रोहणक हाथमे पाइसँ भरल चुकड़ी अछि । एक भागमे सरस्वती आओर शालिनी सेहो अत्यन्त उदास बैसल अछि । ब्रिगेडियर कृष्णाचन्द्र प्रताप स्तब्ध आओर उदास मुद्रामे सोफापर बैसल छथि, हुनका हाथमे रेडियो अछि । सजेन्द्र भाइ, कृष्णचन्द्रकेँ सान्त्वना स्वरूप समझाए रहल छथि ।**)

सजेन्द्र : भाइ अहाँ अपन धैर्य जुनि हेराउ । अहाँपर ई समस्त परिवार टिकल अछि । अहाँ एहि घरक बिचला खाम्ह छी । अहाँ हिलब तँ घर खसि परत । अपने तँ अन्न-पानि त्यागनहि छी सङ्ग-सङ्ग हिनको लोकनि केँ... (**सरस्वती जोरसँ कानए लगैत अछि ।**)

सरस्वती : बौआ हम कोनाकेँ जिअब...

सजेन्द्र : भौजी, अहाँ अनेरहुँ कनैत छी । गोपालकेँ किछु नहि भेलहेँ । गोपाल एकटा बहादुर फौजी अछि । आओर फौजीक कर्तव्य होइत अछि देशक रक्षा केनाइ । गोपाल साक्षात् महावीर अछि । ओकर वीरताक आगाँ दुश्मन टिकि नहि सकैत अछि । कनिआँ ई सभ उठथु आओर भानस-भात चढ़ाबथुगे (**रोहणकेँ देखबैत**) ई नान्हिटा बच्चाकेँ अहाँ सभ लिलोह कए रहल छी ।

सरस्वती : हमर बेटाकेँ जँ किछु भेल तँ हम कोनाकेँ मनुक्खमे रहब बौआ ?

सजेन्द्र : भौजी, फौजमे एक नामक हजारहुँ आदमी रहैत अछि । अहाँ तँ एना कानि रहल छी जेना ई बात सत्ते हो । कनिआँ सभकेँ अधीर बनबैत छी । प्रताप भाइ, अहाँ एना किएक कएने छी ! ब्रिगेडियर साहेब, चलू उठू आओर स्नान-ध्यान करू, ई सभटा मिथ्या थिक ।

कृष्णचन्द्र : (किछु तमसाइत) की बाजि रहल छी सजेन्द्र भाइ ? ई रेडि
अखबार, टेलीविजन... सभटा मिथ्या थिक ?

सजेन्द्र : हँ..., बिना ठोस प्रमाणक सभटा मिथ्या थिक । मिथ्या...
(गिरिधरक निसाँमे मत्त भेल प्रवेश । ओकर हाथमे टेलीग्राम अछि ।

गिरिधर : नहि सजेन्द्र काका... ई सत्य थिक । हमर बाबूजी एकदम ठी
कहैत छथि ! रेडियो, अखबार, टेलीविजन मिथ्या नहि भए सकै
अछि । आओर जँ मिथ्या भए सकैत अछि तँ ई टेलीग्राम मि
नहि भए सकैत अछि । **(पढ़ैत)** एहिमे साफ अक्षरमे लिखल अछि
कि कमाण्डर गोपालचन्द्र प्रताप, आतकंबादीसँ लड़ैत-लड़ैत वी
गतिकेँ प्राप्त कए गेला ।

रंजनी : नहि, ई सत्य नहि थिक... हमर देओर निसाँक प्रभावेँ झूठ बाजि
रहल छथि । माँ... ॥

गिरिधर : भाभीश्री, हम निसाँमे कखनहुँ झूठ नहि बजैत छी । विश्वास नहि
होइत अछि तँ अहाँ स्वयं पढ़िकेँ देखि लिअ **(टेलीग्राम रंजनीकेँ
बढ़बैत)** गोपाल भैया हमरा सभकेँ छोड़ि स्वर्ग चलि गेला
स्वर्ग... । **(गिरिधर भोकारि पारिकेँ कानए लगैत अछि । रंजनी
थरथराइत हाथे टेलीग्राम पढ़बाक चेष्टा करैत अछि । दुइए आखर
पढ़िते ओकरा हाथसँ टेलीग्राम खसि पड़ैत अछि । आओर रंजनी सेहो
विदीर्ण होइत कानए लागैत अछि ।)**

रंजनी : नहि, नहि, ई नहि भेलहेँ । माँ, ई अन्हेर नहि भेल हेँ ई सभ
मिथ्या लिखल अछि । बाबूजी पढ़थु तारकेँ, ई अन्याय नहि होए
हमरा संग ।

**(रंजनी जमीन पर माथ पटकि हाथक चूड़ी फोड़ैत कानए लगै
अछि... । रोहण रंजनीसँ लिपटि, मम्मी ! मम्मी !! कहि कानए लगै
अछि । शालिनी सम्हारैक प्रयास करैत अछि । सरस्वती अलगे
भोकारि पारैत छथि । कृष्णचन्द्र प्रताप टेलीग्राम धीरे सँ उठाकेँ प
पाथरक भाँति ठार रहैत छथि ।)**

रोहण : दादाजी, दादाजी पापाजीकेँ की भेलनि ?

सजेन्द्र : की बात छैक प्रताप भाइ, अहाँ किछु बाजि किएक नहि रह
छी ? की बात छैक ?

[illegible] : गोपालक खबरि एकदम सत्य थिक । गोपाल देशक सीमापर
लड़ैत लड़ैत वीरगतिकेँ प्राप्त भेल...

सरस्वती : ओ दैवा रे दैवा... ।

**(कृष्णचन्द्रक मुँहसँ निकलैत देरी रोहण अवाक रहैत अछि । ओकरा
हाथमे जे चुकड़ी अछि से छुटि जमीन पर खसैत अछि, जाहिमेसँ
चहुँदिस पाइ छिड़िआएत अछि । कृष्णचन्द्रक अतिरिक्त सभक
करुण क्रन्दन तीव्र होइत अछि । सजेन्द्र कखनहुँ रंजनी दिस तँ
कखनहुँ सरस्वती के सम्हारैत छथि । धीरे-धीरे मंच अन्हारमे परिवर्तन
होइत अछि ।)**



अंक : दोसर :: दृश्य : पहिल

**(मंच व्यवस्था पूर्ववत । कृष्णचन्द्र प्रताप सोफापर चिन्तामग्न बैसल
छथि । बाहरसँ रोहण स्कूलक वेष-भूषामे प्रवेश करैत अछि । ओकरा
हाथमे परीक्षा उत्तीर्ण प्रमाण-पत्र अछि । ओ अत्यन्त प्रसन्न अछि ।
रोहण दू-तीन बेर दादाजी-दादाजी कहैत अछि तखन जाकेँ कृष्णचन्द्र
प्रतापक भक टुटैत छनि ।)**

रोहण : दादाजी, अहाँ बहीर भए गेलहुँ की ?

कृष्णचन्द्र : **(करुण स्वरे)** हँ हओ, हम आब बहीर भए गेलहुँ । लोक जखन
बूढ़ होइत अछि तँ बहीरो भए जाइत अछि । की बात छैक, आइ
अहाँ स्कूलसँ बहुत जल्दी आबि गेलहुँ ।

रोहण : आइ हमर रिजल्ट निकललए दादा जी । **(रिजल्ट देखबैत)** देखू
हम पूरा क्लासमे फर्स्ट अएलहुँ हेँ ।

कृष्णचन्द्र : **(रिजल्ट सीट लैत)** अरे बाह ! आइ अहाँ तँ कमाल कए देलहुँ ।
बड़ नीक, सुन्दर ! गोपालक माए... गिरिधरक माए, सुनैत छी,
कनिआँ सुनैत छी, अपन रोहण क्लासमे पहिल आएल हेँ । अरे
अबैत जाइ-जाउ, रोहण फर्स्ट कएलक अछि ।

(सरस्वतीक हड़बड़ाएल खुशीक मुद्रामे प्रवेश ।)

सरस्वती : की कहलहुँ, रोहण फर्स्ट आएल हें ? आओर अहाँ निचेन भ बैसल छी ? जल्दीसँ बजार जाउ, आओर रोहणक वास्ते ए डिब्बा मिठाइ नेने आउ । नेनाकेँ मुँह मिठाएब **(रोहण सरस्वतीके प्रणाम करैत अछि)** खूब निकेना, नीक जकाँ रहू हमर सोना... अ अहिना फर्स्ट करैत रहू । **(कृष्णचन्द्रसँ)** अहाँ मुँह की तकैत छी जल्दीसँ बौआ लेल मिठाइ लाउ ने ।

कृष्णचन्द्र : हँ !... हँ !!... **(बाहर जएबाक क्रममे)**

रोहण : दादाजी, हमरा मिठाइ नहि चाही ।

कृष्णचन्द्र : मिठाइ नहि चाही, तखन की चाही ?

रोहण : पिस्तौल ।

कृष्णचन्द्र : पिस्तौल ?

रोहण : हाँ दादाजी, हमरा पिस्तौल चाही ।

कृष्णचन्द्र : किन्तु पिस्तौल एखन लएकेँ की करब ?

रोहण : हम पिस्तौलसँ सभटा आतंकवादीकेँ जानसँ मारि देब । जे दुश्मन हमरा पापाजीकेँ मारि देलक, ओकरा हम कहिओ माफ नहि करबैक ।

कृष्णचन्द्र : चाबस, हमर बहादुर पोता । किन्तु हम अहाँकेँ एखन पिस्तौल कीनकेँ नहि देब । अहाँ जखन नम्हर भए देशक सिपाही बनि जाएब, तखन अहाँकेँ सरकार स्वयं बन्दूक देत ।

रोहण : थैंकयू दादाजी ।

सरस्वती : नहि रोहण, हम अहाँकेँ सिपाही नहि बनए देब ।

कृष्णचन्द्र : गिरिधरक माए, एहि प्रताप वंशक शोणितक धारकेँ केओ विपरीत दिशामे नहि मोड़ि सकैत अछि । जे यथार्थ अछि से होएबे करत अरे ई दुनू कनिआँ कतए गेलीह, रोहण क्लासमे फस्ट कएलक अछि आओर ई सभ की कए रहल छथि ?

(अचानक भीतरमे हल्ला-गुल्ला होइत सुनाइ पड़ैत अछि । गिरिधरक अबाज स्पष्ट सुनाइ पड़ैत अछि– भाभीश्री ! अहाँ साइन करैत छी की नहि ? शालिनीक हड़बड़ाएल प्रवेश ।)

शालिनी : माँ ! माँ जल्दी भीतर आबथु नहि तँ ओ बहिनकेँ जान लए लेथिन ।

कृष्णचन्द्र : ओकर ई मजाल !

(कृष्णचन्द्र भीतर जएबाक लेल उद्यत होइत छथि कि तखनहि रंजनीक गरदनिमे कचिआ हाँसू लगाए गिरिधरक प्रवेश होइत अछि । ओकर एक हाथमे चेक बुक आओर कलम सेहो देखाइत अछि ।)

गिरिधर : भाभीश्री, अहाँ चेक पर साइन करैत छी कि नहि ?

रंजनी : नहि बौआ हम हुनकर खून-पसेनाक कमाइ अहाँकेँ जूआ-दारू लेल नहि दए सकैत छी ।

गिरिधर : तँ अहाँ अपन जान गमएबाक लेल तैयार भए जाउ ।

कृष्णचन्द्र : गिरिधर... तोँ ई नीक काज नहि कए रहल छेँ । कनिआँकेँ छोड़ैत छहुन कि नहि ?

गिरिधर : जँ अहाँकेँ कनिआँ पर बहुत माश्चर्य अछि तँ कहिअनु एहि चेक पर जल्दीसँ साइन करबाक लेल । आइ हमरा दस हजार टाकाक परम आवश्यकता अछि । आइ हमर प्रेस्टिजक सवाल अछि । प्रेस्टिजक...।।

कृष्णचन्द्र : लुटिहारा... आतंकवादी, आततायी... गुण्डागर्दी करबाक लेल कनिआँ तोरा एकटा छदाम तक नहि देथुन ।

गिरिधर : बाबूजी, भाभीश्री जँ एहि चेक पर साइन नहि करतीह तँ हमरा हाथक ई कचिआ हाँसू हिनकर मोलाएम गरदनि केँ अजोह बतिआ जकाँ कचरैत एहि पारसँ ओहि पार चलि जाएत ।

सरस्वती : बौआ, नेहोरा करेत छिऔक । तोहर पाएर धरैत छिऔक । हाँसू हाथसँ फेक । पाइक खातिर तोँ लोकक जान लेमए पर उतारू भए गेलएँ ?

गिरिधर : तोँ बीचमे नहि आ, हिनका सभकेँ बैंकमे टाका सड़ि रहल छन्हि । भैआक बलिदानक बाद सरकार दस लाख टाका देलक । दस लाख । आओर हम तँ मात्र दस हजार टाका माङ कए रहल छी । मात्र एक अंश... ऑनली वन परसेन्ट...

कृष्णचन्द्र : गिरिधर ! तोँ कनिआँकेँ छोड़ैत छहुन कि नहि ?

गिरिधर : बाबूजी, ई चेक पर साइन करतीह कि नहि ?

कृष्णचन्द्र : नहि ।

गिरिधर : तँ हमहूँ नहि ।

कृष्णचन्द्र : तँ तोँ कनिआँ केँ नहि छोड़बहुन ?

गिरिधर : नहि... ।

कृष्णचन्द्र : ई तोहर अन्तिम निर्णय छौक ?

गिरिधर : यस । जतबा काल धरि एहि चेकबुक पर अहाँक ई दुलरुआ पुत साइन नहि करतीह, ततबा काल धरि छोड़ब तँ दूरक गप भेल हिल-डोल तक नहि कए सकैत छथि ।

कृष्णचन्द्र : ठहर, आइ तोहर नौटङ्की खतम कइए दैत छिऔक ठहर... (**कृष्णच आवेशमे भीतर जाइत छथि आओर पिस्तौल आनि गिरिधर पर ता दैत छथि ।**)

सरस्वती : (**सोझाँ आबि**) ई अहाँ की कए रहल छी ?

कृष्णचन्द्र : (**सोझाँसँ सरस्वतीकेँ हटबैत**) एकदम ठीक कए रहल छी । अह आइ बीचमे एकदम नहि बाजि सकैत छी । खाली अहाँक दुला एकरा बहसाए देलक । हे फेर कहैत छिऔक ई हमर अन्तिम निर्णय थिक, कनिआँकेँ छोड़ैत छहुन कि हमरा गोली चलएबाक लेल विवश कए रहल छेँ ।

गिरिधर : (**हँसैत**) बाबूजी, अहाँ हमरा पिस्तौलक डर देखाए रहल छी ? पिस्तौल तँ हमरा लेल खेलओना अछि खेलओना ! गोली चला सकैत छी... जँ अहाँकेँ गोली चलएबाक एतबा सओख अछि त हमर सीना खुजल अछि-- चलाउ गोली... चलाउ... ।

कृष्णचन्द्र : (**अति आक्रोशसँ भरल**) गिरिधर... ! (**आवेशमे आबि गिरिधर पर गोली चला दैत छथि कि तखनहि बाहरसँ सजेन्द्र आबि पिस्तौलक निशानकेँ बिगाड़ि दैत छथि कनेकालक लेल मंच स्तब्ध रहैत अछि ।**)

सजेन्द्र : अपन भाइ ! ई की ! राम, राम, राम ! भाइ अहाँ की करए जा रहल छलहुँ ? युद्धक मैदानमे शत्रु पर गोली चलबैत-चलबैत आइ अपन सन्तान पर गोली चलबए लगलहुँ ? धिक्कार अछि अहाँकेँ... ।

कृष्णचन्द्र : सजेन्द्र भाइ एकरासँ नीक हमर दुश्मन छल । दुश्मन ! कमसँ कम ओ हमरा प्रतिष्ठाक तँ धज्जी नहि उड़बैत छल । गोपाल देशक कतेको आतंकवादीकेँ माटिमे मिलाए देलक । परन्त अपनहि घरमे नुकाएल एहि आतंकवादीकेँ नष्ट नहि कए सकल ।

गिरिधर : बाबूजी, ई डाइलॉग सभ अपनहि पास राखू । हमरा सुनएलासँ कोनो लाभ नहि, हम ई दृश्य परिवर्तन नहि होमए देब । ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रताप अहाँक हाथमे पिस्तौल रहलाक बादहुँ हम बाँचि गेलहुँ । निशाना चुकि गेल । हा-हा-हा मुदा हमरा हाथमे ई कचिआ हाँसू अछि, हम एखनहि भाभीश्रीकेँ हलाल कएकेँ देखाए सकैत छी । हम मात्र पाँच तक गनती करब । एहि बीचमे जँ हमर मनमाफिक काज नहि भेल तँ हम किछु कए सकैत छी । सजेन्द्र काका अहू गबाह छी । बादमे हमरा माथ दोख नहि मढ़ब । (**गिरिधर एकसँ पाँच तकक गिनती शुरू करैत अछि ।**)

सजेन्द्र : नहि गिरिधर नहि, एहन किछु अनुचित जुनि करब । बाजू की चाहैत छी ?

गिरिधर : तखन से लगभग सएओ बेर बाजि चुकल होएब । एहि चेक पर भाभीश्रीक हस्ताक्षर चाही । आइ मिन सिगनेचर ।

सजेन्द्र : कनिआँ ओहि चेक पर साइन कए देथुन । (**गिरिधर कलम आओर चेकबुक रंजनीक हाथमे थम्हाबैत अछि । रंजनी विवश भावे चेकबुक पर दस्तखत कए चेक फाड़िकेँ गिरिधर केँ दैत अछि ।**)

गिरिधर : (**चेक लैत**) धन्यवाद भाभीश्री । अनेकानेक धन्यवाद । दस्तखत करबाक कएबे कएलहुँ मुदा बन्दुकक गोली छुटलाक बाद । खैर कोनो बात नहि तैओ धन्यवाद । सजेन्द्र काका जी, जान बचएबाक लेल अहूँकेँ असीम धन्यबाद । तँ आब प्रस्थान करैत छी । ओके ? बाइ एवरीबडी । बाइ मिस्टर कृष्णचन्द्र प्रताप... । पिस्तौलक सबटा गोली सठि जाएत किन्तु हमरा किछु नहि होएत । हम थेथर छी, थेथर ! हा-हा-हा चलै छी, पुनः भेँट वार्ता होएतैक एही कुरुक्षेत्रमे । बाइ...

(गिरिधरक प्रस्थान होइत अछि । रंजनी कानए लगैत अछि । रोह
टुअर जेँका रंजनीक समीप अबैत अछि । सरस्वती सान्त्वना स्व
सम्हारैत छथि । शालिनी रोहणक माथ-मुँह हँसोथति ओकरा भी
दिस लए जाइत अछि । कृष्णचन्द्र प्रताप हिम्मति हारल सन, धम
सोफा पर बैसैत छथि ।)

सजेन्द्र : भाइ, अहाँ तँ बड़का-बड़का युद्ध जीत चुकल छी । अहाँ अधी जुनि होउ । सभटा ठीक भए जाएत ।

कृष्णचन्द्र : आब किछु ठीक नहि होएत सजेन्द्र भाइ ! आब किछु ठीक नहि होएत । मानवताक अट्टालिकाकेँ दानवता विध्वंस कएकेँ चलि गेल । लड़ाइक मैदानमे जीतए बाला ई ब्रिगेडियर आइ गृहयुद्ध मैदानमे सभटा मोर्चा हारि गेल... ।

(सजेन्द्र कृष्णचन्द्रकेँ धरैत छथि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : दोसर

(गामसँ हटि एकटा एकान्त स्थल, जतए प्रकाश आओर गोखुल गिरिधरक व्याकुलतासँ प्रतीक्षा कए रहल अछि ।)

प्रकाश : रओ एखन धरि शिकार देखाइ नहि पड़ैत अछि ? बैंकक समय तँ लगिचिआएल जा रहल अछि !

गोखुल : तँ एहिमे एतेक चिन्ता करबाक कोन काज ? अबिते होएत, जाएत कतए ? जएबे करत तँ हमर की लेत ?

प्रकाश : की बाजि रहल छेँ गोखुल ? तोँ अपन संकल्प बिसरि गेलएँ ? आइ ओहि संकल्पक पहिल चरण थिक । जँ अजुका नाटकक पहिल दृश्य सकसेस भए गेलौ तँ बूझ जे पूरा नाटक हिट ।

गोखुल : हिट नहि, सुपर हिट...

प्रकाश : हमर जिनगीक एकहिटा संकल्प अछि, अहङ्कारी रिटायर्ड ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक बरबादी । ओहि हवेलीक एक-एकटा पजेबाकेँ उखाड़ि जँ समुच्चा गाममे खड़ञ्जा नहि पाटि देलहुँ तँ हमर नाम प्रकाश नहि ।

गोखुल : हँ प्रकाश, हम ओ दिन कहिओ नहि बिसरि सकैत छी, जखन हम लोकनि सरस्वती पूजाक चेहरी मङ्गबाक लेल हुनका ओहिठाम गेल छलहुँ । बिसरि गेलएँ कतेक अपमान कएलन्हि ? कहलन्हि पढ़ाइ-लिखाइ किछु नहि, सरस्वती पूजाक नाम पर अय्यासी करबाक लेल डिब्बा लएकेँ भीख माङब । लाज नहि होइत अछि ? जाउ हम, अहाँ सभके भीख नहि देब ।

प्रकाश : ओ एतबहि नहि, एक दिन ओ हमर बाबू तक केँ घोर अपमान कएलनि । अखाढ़क मास छल । हमर बाबू धनरोपनिक खातिर किछु टाका करजा माङए गेल छलखिन, तँ उनटे उपदेश देमए लगलखिन– जुआन बेटाकेँ घरमे बैसाए केँ खुआ रहल छी, किछु हाथ-पाएर फेकत से नहि । हम चिट्ठी लिखि दैत छी, पठा दिऔक शहर, फौजमे भर्ती भए जाएत । ताहि पर हमर बाबू कहलखिन– हमर सभक वंशक ई धन्धा नहि थिक । ताहि पर हमर बाबूकेँ की-की नहि कहलनि । कहलनि– अहाँ बेटाकेँ हिजड़ा बनाकेँ राखए चाहैत छी, आओर हम हिजड़ाक समर्थक नहि छी । एतेक पैघ अपमान ? कहू तँ, ओ सभ पुरुख आओर हम सभ हिजड़ा ?

गोखुल : एकर मतलब तँ इएह ने भेल, जे देशक सेवक सएह पुरुख, बाँकी सभ हिजड़ा ।

(हठात् प्रकाश एवं गोखुलक पाँछा गिरिधर देखाइत अछि । जे सभटा बात सुनि रहल अछि । ओ चुप-चाप बैसि जाइत अछि । ओकरा पर मद्धिम इजोत पड़ैत अछि ।)

प्रकाश : हँ, हुनका हिसाबसँ तँ सएह । किन्तु आब ओ दिन बेसी दूर नहि, जखन कृष्णचन्द्र प्रताप स्वयं टिनही बाटी लएकेँ गामक दलाने-दलान भीख माङताह । हा-हा-हा- खाली ई रहस्य गिरिधरकेँ नहि बुझबाक चाही कारण जँ ओ बुझि गेल तँ सभटा ड्रामा फ्लॉप ।

गोखुल : नहि, नहि, ओ बूझत कोना ? ओ तँ हमर सभक पिट्ठू अछि । आगिमे कहबैक तँ आगिमे कूदि जाएत। इएह तँ सुन्दर मौका अछि, ओकरा आर बेसी सनकएबाक ।

प्रकाश : ओहि कुलक खून-पसेनाक कमाइक मटरगस्ती कए ओकरा ने थापड़ मारबैक जे जिनगी भरि स्मरण राखत । एखन तँ खाली टाका-पैसा आनैत अछि, किछु दिनक बाद तँ ओ ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक बहु-बेटीकेँ निलाम करबाक लेल खुल्लम खुल्ला बाट पर लाओत । तखन जबाव देबैक ओहि घमण्डी बुढ़बाकेँ-ब्रिगेडियर साहेब, कतए गेल खानदानक पुरुषार्थ, मर्यादा, स्वाभिमान आओर देशभक्ति ?

गोखुल : एकदम ठीक प्रकाश ! काज तँ एहने ने करबाक चाही जे साँपो मरि जाए आओर लाठिओ ने टूटए।

प्रकाश : ताहि द्वारे तँ एहि तरहक चक्रव्यूहमे फँसाए ओकर भविष्यकेँ नष्ट कए ओहि परिवारक अहङ्कारकेँ चकनाचूर करए चाहैत छी ।

गोखुल : आओर जँ ओकरामे हठात् परिवर्तन भए गेलए तँ ?

प्रकाश : ई कदापि नहि भए सकैत अछि । जे व्यक्ति अपन लति पूरा करबाक लेल सोहागक पहिल रातिमे अपन कनिआँक सभटा गहना उतारि, दारुक बोतलमे दएकेँ गट-गट कए पीबि गेल ओकरामे आब की परिवर्तन आओत ?

गोखुल : एकदम करेक्ट ! जे हमरा सभक एकटा इशारा पर नाङ्ट नाचबाक लेल तैआर भए जाइत अछि, तकरासँ लोक आब की परिवर्तनक उमेद राखत !

प्रकाश : जे अपन बाप, माए, भाउजि आओर घरबालीक धूआ तक नहि देखए चाहैत अछि, सदिखन घृणा आओर पित्तसँ जड़ैत रहैत अछि, ओकरामे आब की परिवर्तन आओत । आओर जँ चमत्कार भए आबिओ गेलैक तँ एहन ने कर्म-कुकाण्डमे फँसाएब जे ओ चोट्टा कहिओ नहि उबरि सकैत अछि... हा...हा...हा... ।

(दुनूक ठहक्का प्रस्फुटित होइत अछि । तखनहि पाँछामे नुकाएल गिरिधर अपन मित्रक रचल षड्यंत्र सुनि, व्यंग्यात्मक ढंगसँ थपड़ी बजबैत अछि । दुनू गोटा गिरिधरकेँ देखि अचम्भामे पड़ि जाइत अछि । इजोत सम्पूर्ण मंच पर पसरैत अछि ।)

गिरिधर : बाह ! बाह !! बाह !!! क्या थीम है । नाटकक थीम तँ बहुत बढ़िआँ अछि । निश्चित रूपसँ सुपर हिट होएत । मुदा ई थीम आब एतहि तक रहत । एतए सँ नाटकक कथन नवका मोड़ लेत । आओर ओ नवका मोड़ अहाँ दुनू गोटाकेँ जूता-चप्पल लए जुतिआएबसँ शुरू होएत । **(पाएरसँ चप्पल निकालि प्रहार करबाक तत्परतामे)** प्रताप खानदानक बहु-बेटीकेँ खुल्लम-खुल्ला बाट पर निलाम करैक ठिकेदार बनलहुँ हेँ ।

प्रकाश : **(प्रहारक अवरोध करैत)** अरे रे रे गिरिधर ई तोँ की कए रहल छेँ ? तों हँसी ठट्ठाकेँ...

गिरिधर : चुप ! भिखमङ्गाक जनमल । धोखाबाज, विश्वासघाती, मित्रताक नाम पर कलङ्क । तोँ हमर खानदानकेँ भिखमङ्गा बनबए चाहैत छेँ ? तो प्रताप वंशक बहु-बेटीकेँ निलाम करबए चाहैत छेँ ! छीआ-छीआ...

प्रकाश : **(बनाबटी हँसी हँसैत)** ओ तँ ई बात छैक । अरे हम सभ तँ एहि तरहक थीम बना-सिनेमा कम्पनीकेँ देबए चाहैत छी ।

गोखुल : हँ गिरिधर हमरा लोकनि केँ एकटा सिनेमाक प्रोड्यूसर हाथ लागि गेलएहेँ, ओही द्वारे एहि तरहक परिकल्पना करैत छलहुँ । मात्र कॉन्सेप्ट ।

गिरिधर : अच्छा तँ सेहो हमरे परिवारकेँ धज्जी उड़ाए ? सिनेमाक लेल एहि गाममे आर कोनो परिवार नहि भेटलौक ?

प्रकाश : अरे गिरिधर तोँ तँ एकदम सँ सीरियस भए गेलएँ ।

गिरिधर : सीरियस नहि होउ तँ नाचू ? हमरा आब सभसँ मोन टूटि गेल । सभसँ घृणा भए गेल । सभ हमर शत्रु । हमर भविष्यक हत्यारा...

गोखुल : एहन बात सभ जुनि बाज गिरिधर । तोरा, हमरा लोकनिकेँ चीन्हएमे धोखा भए रहल छौक ।

गिरिधर : बस-बस भए गेल । आब बेसी सफाइ देबाक कोनो काज नहि । अहाँ लोकनिकेँ बहुत-बहुत धन्यवाद जे हमर आँखिक करिआ पट्टी खोलि देलहुँ । आब ने हम अहाँ सभक दोस्त आओर ने अहाँ सभ हमर... ।

(जएबाक लेल उद्यत होइत अछि ।)

प्रकाश : गिरिधर, तो हमरा सभकेँ छोड़ि कतए जाए रहल छेँ ?

गिरिधर : जतए सँ जिनगी शुरू होइत अछि ।

प्रकाश : बहुत नीक बात ! बहुत उत्तम विचार । किन्तु अजुका प्लान । दस हजार टाकाक चेक ! आओर मौज-मस्ती...

गोखुल : हँ गिरधर, हम दुनू गोटाह कतेक कालसँ तोहर प्रतीक्षा कए रहल छी । जल्दी चल, नहि तँ बैंक बन्द भए जाएत ।

गिरिधर : ओ तँ अहाँ लोकनिक ध्यान, दस हजारक चेक पर टाङ्गल अछि ?

प्रकाश : अवश्य किने !

गिरिधर : बिसरि जाउ आब ओहि चेककेँ ।

प्रकाश : बिसरि जाउ, माने ? ओहि दस हजारक चेकपर हमरो सभक अधिकार अछि । कारण ओ प्लान तँ हमरे सभक बनाएल अछि ।

गिरिधर : आब अपन प्लान अपने पास राखू । ई चेक जतए सँ आएल अछि, ओतहि जाएत ।

प्रकाश : नो-नो-नो ! ई नहि भए सकैत अछि । चाहे ओ चेक थम्हाए दिअ अथवा जेना पूर्व निर्धारित बनाएल आजुक प्लान अछि ओहि मोताबिक काज करू, नहि तँ ?

गिरिधर : नहि तँ, माने ? ओ तँ अहाँ सभ आब जबरदस्ती पर उतरि गेलहुँ ।

गोखुल : आवश्यकता पड़ला पर ओहिसँ बेसिओ पर उतरि सकैत छी । चुप-चाप भलमानुस जकाँ चेक निकाल...

गिरिधर : जँ नहि निकालब तँ ?

प्रकाश : गड़दनिमे गलौधी लगा सनकुट कए देबौक आओर ओ चेको छिन लेबौक । चल निकाल सार ।

गिरिधर : ऐ, मुँह सम्हारिकेँ बाज । एहि शरीरमे एखनहुँ उएह प्रताप वंशक उष्ण शोणित उधिआ रहल अछि... एकबेर कहि देलिऔक नहि भेटतौक । आइ सँ तोहर सभक खरात बन्द । चल बाट छोड़...

प्रकाश : तँ तोहर बाटकेँ छेकने छौक ? जो... (गिरिधर आगाँ बढ़ैत अछि ।) गोखुल, मुँह की तकैत छेँ, पकड़ सारकेँ आ लगा गड़दनिमे गलौधी ई ओना नहि मानत ।

गोखुल : हँ ई ओना नहि मानत । पकड़...

(दुनू गोटए मिलि गिरिधरकेँ गलौधी लगएबाक अथक प्रयास करैत अछि... आओर अन्तमे सफल भए जाइत अछि । प्रकाश, गिरिधरक गरदनि ममोड़ए चाहैत अछि ।)

गिरिधर : छोड़, छोड़ैत छेँ कि नहि ? देख तोँ सभ नीक नहि कए रहल छेँ ।

प्रकाश : आब बजाबह ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापकेँ, देखएथुन अपन प्रताप । हा... हा... हा... निकाल चेक ।

गोखुल : ऐ, चेक निकालैत छेँ की दिऔक ससरी चापि ।

गिरिधर : कहि तँ देलिऔक, हमर जान चलि जाएत से कबूल किन्तु ओ चेक आब किन्नहुँ नहि भेटतौक ।

(प्रकाश गिरिधरक पेन्टक जेबी इत्यादिमे ताक-हेर करैत अछि परन्तु चेक नहि भेटैत अछि । अहि बीचमे गिरिधर अपन शरीरक पूर्ण जोर लगा कए गोखुलकेँ पछाड़ि ओकरा छाती पर बैसि ओकरा गरदनिमे गलौधिआ लगबैत अछि ।) आब बजाबह अपन बापकेँ ? **(मुक्कासँ प्रहार करैत अछि ।)** चेक लेमए चेक ? ले सार चेक ।

गोखुल : बाबू हो मारि देलक...

प्रकाश : ऐ-ऐ तोँ छोड़बीही कि नहि ?

गिरिधर : **(धक्का मारैत)** चल हट... कुकूर । तोहर सभक रोटी बन्द ।

प्रकाश : ठहर तोहर सभटा सेखी बाहर कए दैत छिऔक । **(जेबीसँ चक्कू निकालि ।)** आब तोहर दिन लगिचाएल छौक ससुराक जनमल...।

(प्रकाश गिरिधर पर चक्कू चलबैत अछि । गिरिधर अपनाकेँ बचएबाक क्रममे गोकुलकेँ छोड़ि सतर्क भए जाइत अछि । अवसर पाबि गोकुल पाँछूसँ गिरिधरकेँ कसिआकेँ पकड़ैत अछि ।)

गोकुल : प्रकाश, इएह मौका छौक । भोँक एकरा पेटमे चक्कू आओर निकाल दस हजारक चेक ।

गिरिधर : आब एहि जनममे बिसरि जो...

प्रकाश : तँ दोसर जनम लेबाक लेल तैआर भए जो ।

(प्रकाश गिरिधरक पेटमे चक्कू भोँकए चाहैत अछि कि तखनहि सजेन्द्र दौड़ैत आबि प्रकाशक हाथसँ चक्कू छिनि गिरिधरक रक्षा करैत छथि ।)

सजेन्द्र : अरे-अरे... रे... रे चण्डलबा चक्कू छोड़... ई सभ की भए रहल छैक ? चक्कू छोड़ (**चक्कू छिनि**) तोहर सभक इएह मित्रता छौक ? एक दोसरक शोणित पीबि, अपन पिआस मिझाबए चाहैत छेँ ? धिक्कार छौक तोहर सभक एहन निकृष्ट आओर घटिआ मित्रताकेँ ? धिक्कार छौक तोहर सभक शिक्षा आओर वैचारिकताकेँ... । छिआ छिआ... । राम-राम-राम... ।

प्रकाश : सजेन्द्र काका, ई हमरा लोकनिकेँ धोखा देलक अछि । धोखा ! हम एकरा सँ बदला लएकेँ छोड़बैक...

सजेन्द्र : खबरदार जे दुबारा एहन बात बजलएँ... धोखा तँ तोँ सभ मिलिकेँ एकरा देलहिन हेँ । हम सभटा गप दूरहि सँ तोरा लोकनिक सुनैत छलहुँ... तोँ दुनू मित्रता कएकेँ एकर भविष्यकेँ अन्हार कए देलहिन... गामक एकटा परम आदरणीय परिवारकेँ तो सभ नरकमे धकेलि देलही । जाए जो एहिठामसँ... नहि तँ हम दुनू गोटाकेँ खून-करक अपराधमे आजीवन जेलमे पठा सड़ा देबौक... थाना एहिठामसँ बेसी दूर नहि छौक । (**दुनू गोटए अछताइत-पछताइत प्रस्थान करैत अछि । गिरिधरसँ**) चाबस बेटा, चाबस... आइ अहाँमे आएल "हठात् परिवर्तन" देखि हृदयमे आनन्दक हिलोर मारि रहल अछि। चलू, घर चलू... ।

गिरिधर : सजेन्द्र काका, एखन हमरा असगर छोड़ि दिअ... ।

सजेन्द्र : गिरिधर एहिठाम एखन असगर रहनाइ ठीक नहि । चलू... ।

गिरिधर : (उत्तेजित भावमे) कहलहुँ ने, एखन हमरा असगर छोड़ि दिअ । मानलहुँ कि अहाँ हमरा एक्कहि दिनमे दुइ-दुइ बेर जिनगी बचएलहुँ हेँ । एहि वास्ते हम अहाँक अभारी छी । किन्तु आब हम कहि रहल छी जे हमरा किएक बचएलहुँ ? किएक बचएलहुँ हमरा ? किएक बचएलहुँ हमरा... जाउ सजेन्द्र काका एखन एतए सँ जाउ... हमरा एकान्तमे छोड़ि दिअ ।

(गिरिधर बजैत-बजैत जोर-जोरसँ बिदीर्ण भए कानए लगैत अछि । सजेन्द्र अपन छातीसँ लगाए ओकर पीठ हँसोथति छथि । नहु-नहु मंच अन्हार मे परिवर्तित होइत अछि)



दृश्य : तेसर

(स्थान पूर्ववत मंच पर वृताकार इजोतक मध्यमे गिरिधर घुट्ठीक बले बैसल अछि आओर हाथमे चेक लेने विस्मय भावसँ देखैत सिसकि-सिसकि कानए लगैत अछि । तखनहि नहु-नहु मंचक दोसर भागसँ झिलमिल इजोतमे गिरिधरक जेठ भाइ गोपाल फौजीक वेश-भूषामे सुसज्जित प्रवेश करैत अछि)

गोपाल : गिरिधर तोँ कनैत किएक छेँ ? हम तोरा सङ्ग छिऔने । उठ एहि नरक कुण्डसँ बहार हो आओर आगू बढ़ । आब चिन्ताक कोनो प्रयोजन नहि ! जखनहि आँखि खुजल-तखनहि भिनसर । जखनहि बाट फरीछ होमए लागए तखनहि बुझ जे गणतव्य समीप आबि गेल। पश्चातापक नोर मनुक्खक पापकेँ धोए दैत अछि । उठ, आब विलम्ब जुनि कर । आबह आओर हमर ई पवित्र फौजी वस्त्र पहिर, मातृभूमिक रक्षार्थ एवं शत्रुकेँ विध्वंस करबाक लेल सीमा पर प्रस्तुत भए जा आओर राष्टक गौरवकेँ बढ़बैत अपन प्रताप वंशक मर्यादाकेँ आओर यशस्वी बनाबह । गिरिधर... । आब की सोचि रहल छह ? की हमर अपूर्ण आकाङ्क्षाकेँ ई फौजी वस्त्र पहिर पूरा नहि करबह ? की ओहि देशद्रोहीकेँ धराशायी नहि करबह जे हमर माएक छातीमे धीपल शूल भोंकि रहल अछि ? की एखनहुँ अही नरक कुण्डमे रहबाक इच्छा भए रहल छह ?

गिरिधर : नहि भैया नहि, आब हम एहि नरकमे नहि सड़ए चाहैत छी । हम एहि देशक सिपाही बनए चाहैत छी... । आओर देशक रक्षा करए चाहैत छी... दिअ हमरा वर्दी भैया... भैया... भैया... भैया... कतए गेलहुँ भैया... ? भैया...भैया...

(गिरिधर गोपालक दिस बढ़ैत अछि, किन्तु गोपाल आस्ते-आस्ते बिलाएल जाइत अछि । गिरिधरक मुखमण्डल पर एकटा परिवर्तनक भाव देखल जाइत अछि । एकटा दृढ़ संकल्प निर्णयक संकेत कए रहल अछि ओकर अपलक भाव भंगिमा । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : चारिम

(ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक हवेली । शालिनी घरमे असगर ठार चिन्तामे मग्न दुख आओर क्षोभ प्रकट करैत अछि । मंच पर मद्धिम प्रकाश अछि ।)

शालिनी : हम एकटा पढ़ल-लिखल स्त्री भए किएक एकटा दारुखोर, जुआरी एवं सनकल बताहक अत्याचार बर्दास्त करब ? सड़ल-गन्हाएल परम्पराक नामपर हम अपन जिनगी किएक नष्ट करब ? जानि नहि हमर बाबूजी सन शिक्षित आओर संवेदनशील लोक केना पैघ खानदानक मोहमे पड़ि हमरा नरकमे धकेलि देलनि ! अवश्य हमरा सङ्ग विश्वासघात भेल... । विश्वासघात !! परन्तु हम पढ़ल-लिखल छी । ग्रेजुएट छी, किएक हम सहब पुरुखक अमानवीय व्यवहार कें ? नहि, एहन चाण्डाल पुरुखक संग हम एडजस्ट नहि कए सकब । हमरा मनुक्ख चाही । मनुक्ख... !! चाहे ओ ठेले-रिक्साबला किएक नहि हो । बाबूजी हमरा क्षमा कए दिअ, हम एहि घरमे अपन जिनगीक निर्वाह नहि कए सकैत छी ।

(शालिनी भावविभोर भए सिसकि-सिसकि कानए लगैत अछि कि तखनहि बाहरसँ गिरिधरक प्रवेश होइत अछि... । चेहरा झमारल सन बुझना जाइछ । एकटा अपराधीक भाँति घरक एक कोनमे जाए ठार भए जाइत अछि ।)

शालिनी : (देखिते घृणासँ मुँह फेरि) आबि गेलहुँ, दस हजार टाकाकेँ दारुक बोतलमे चढ़ा ? आबि गेलहुँ कुलक मर्यादाकेँ गामक चौबटिआ पर निलाम कए ? आबि गेलहुँ आवारा मित्र मण्डलीक संग अपन नारकीय तृष्णाकेँ तृप्त कए... ?

गिरिधर : (क्लान्त भए) शालिनी...

शालिनी : जुनि लिअ हमर नाम अहाँ अपन मुँहसँ, हमरा अहाँ सँ घृणा अछि... घृणा...!! आइ हेट यू... चलि जाउ हमरा सोझासँ नहि तँ हम आवेशमे किछु कए बैसब... ।

गिरिधर : अरे पहिने हमर गप तँ सुनू ।

शालिनी : आब हम अहाँक किछु नहि सुनए चाहैत छी... हमरा अपन दुर्भाग्य पर असगर छोड़ि दिअ । चलि जाउ हमरा लगसँ ।

गिरिधर : हम एखनहि चलि जाएब, परन्तु जएबासँ पहिने हमर गप सुनि लिअ...

शालिनी : कहलहुँ ने हम अहाँक किछु नहि सुनए चाहैत छी । हमरा आब मर्द परसँ एकदम विश्वास उठि गेल । सभ छलिआ, सभ प्रपञ्ची अछि... ।

गिरिधर : शालिनी, अहाँ हमरा क्षमा कए दिअ ।

शालिनी : क्षमा ? हम के होइत छी अहाँ केँ क्षमा करएबाली । क्षमा जँ मङ्गबाक अछि तँ ओहि माए तुल्य भाउजिसँ माँगू... टाकाक खातिर जिनकर गरदनि हलाल करैत छलिअनि । क्षमा यदि मङ्गबेक अछि तँ अपन माए सँ माँगू जे अहाँकेँ नौ महिना तक पेटमे राखि, एहि धरती पर जन्म देलनि । क्षमा जँ माङ्गबाके अछि तँ अपन पितासँ माँगूँ जिनकर तपस्याकेँ अहाँ भंग कए एहि आदर्श परिवारक स्वाभिमानकेँ थकुचा कए देलहुँ । क्षमा जँ...

गिरिधर : ओह शालिनी..., बस करू... बस करू... हमरा आब बर्दास्त नहि होइत अछि । हम पापी छी । महाअपराधी छी !! हमरा माए, भाउजि आओर बाबूजीसँ आँखि मिलएबाक साहस नहि होइत अछि... विश्वास करू शालिनी, आइ हमर आँखिक करिआ पट्टी खुजि गेल । हम अपन जिनगी नब ढंगसँ शुरू करए चाहैत छी । हमरा- एक टा मौका दिअ ।

शालिनी : हम अहाँके बहुत मौका दए चुकल छी । हमरा अहाँक आ नाटक पर आब कोनो भरोसा नहि अछि। हमर हृदय आब अहाँ सँ टूटि चुकल अछि । आब ई कहिओ जुटि नहि सकैत अछि । जाउ हमरा आओर उछन्नर... ।

गिरिधर : शालिनी, आइ हमरा अहाँसँ बहुत आवश्यक गप करबाक अछि । हम एखन एक्को मिसिआ निसाँमे नहि छी । बिलकुल होसो-हवासमे छी... सुनू हमर गप ।

शालिनी : हम नहि सुनब । आइसँ ने हम अहाँक स्त्री आ नहि अहाँ हमर पति... । हमर अहाँक सम्बन्ध विच्छेद ।

गिरिधर : **(बाँहि पकड़ैत)** शालिनी, आइ अहाँके हमर गप सुनहि पड़त ।

शालिनी : **(विरोध करैत)** अहाँ हमरा छोड़ैत छी कि नहि ? देखू अहाँ हमरा स्पर्श नहि कए सकैत छी । प्लीज डॉन्ट टच मी... छोड़ब कि नहि ?

गिरिधर : नहि ! पहिने हमर गप सुनू ।

शालिनी : नहि छोड़ब ?

गिरिधर : **(आक्रोशमे)** नहि ! नहि !! नहि !!! हम अहाँके नहि छोड़ब ।

शालिनी : ओ-ह यू...

(शालिनी आवेशमे आबि गिरिधरक हाथ छोड़ाबैत खूब जोरसँ ओकर गालपर एक थापर मारैत अछि... । गिरिधर शालिनीके छोड़ि दैत अछि । ओ अकबकाएत ओकरा दिस तकैत रहि जाइत अछि ।)

गिरिधर : **(गाल हँसोथति)** बाह ! बहुत नीक लागल अहाँक ई थापड़ मिसेज शालिनी ! चिरस्मरणीय रहत । ओना हमरा अहूँसँ बेसी नीक थापड़ मारए अबैत अछि । एकहि थापड़मे ई सभटा घमण्ड चकनाचूर भए जाएत किन्तु एखन हम से नहि करब । एकटा समय आओत जखन हम एहि थापड़क सटीक उत्तर देब ।... बेस, अहाँ तँ हमरा क्षमा नहि करब किन्तु अहाँके क्षमा कए देलहुँ । हम आब जा रहल छी । अहाँके एकदम स्वतंत्र कए... भए सकए तँ माए, बाबूजी एवं भाभीश्रीके हमर क्षमा-याचना कहि देबनि । **(जेबीसँ दस हजारक चेक निकालि शालिनीके दैत)** ई लिअ, भाभीश्रीक ई दस हजारक चेक आपस कए देबनि... **(चेक दए आवेगमे गिरिधरक प्रस्थान होइत अछि ।)**

(शालिनी किछु कहए चाहैत अछि किन्तु कहि नहि पाबि रहल अछि। किंकर्तव्यविमुढ़ भए ठारे रहि जाइत अछि... तखनहि भीतरसँ सरस्वतीक हड़बड़ाएल प्रवेश होइत छन्हि ।)

सरस्वती : कनिआँ, गिरिधर फेर निसाँ कएके आएल छल... ?

शालिनी : नहि माँ **(चेक दैत)** लेथु, बहिनक ई दस हजारक चेक आपस कए तमसाके चलि गेलाह ।

सरस्वती : **(चेक लैत)** गे दाइसभ गे दाइसभ, चेक आपस कए देलक ? एतेक पैघ परिवर्तन ? सुनै छी कनिआँ, हेअए हीरा सुन्नरि... हीरा सुन्नरि...

रंजनी : **(प्रवेश कए)** की भेलनि माँ, बहुत खुश छथि ?

सरस्वती : हँ, हे लिअ, अहाँक टाका अहाँक देओर आपस कए देलक ।

रंजनी : **(चेक लैत आश्चर्य)** माँ ई सभ कोना भेल ? हमरा तँ विश्वास नहि भए रहल अछि। एहिमे जरूर कोनो...

सरस्वती : **(शालिनी दिस बढ़ैत)** ई सभटा हमर लछमिनियाँ कनिआँक कमाल अछि । तेँ लोक कहैत अछि, नीक गाम-ठाम, कुल-शील आओर पढ़ल-लिखल पुतहुक बाते किछु आर होइत अछि । जाउ, भगवान् अहाँके सोहाग आओर समाङ दथि...

शालिनी : **(कनैत)** नहि माँ एहिमे हमर कोनो योगदान नहि अछि ।

(शालिनी कनैत भीतर दिस प्रस्थान करैत अछि । नेपथ्यसँ कृष्णचन्द्र प्रतापक स्वर– घरमे की फुसुर-फुसुर भए रहल अछि कहैत प्रवेश)

कृष्णचन्द्र : फेर कोनो नबका काण्ड भेलए ? कनिआँ घरसँ कनैत किएक बाहर भेलीहे ?

सरस्वती : गिरिधर आएल छल... आओर दस हजारक चेक आपस दए गेल ।

कृष्णचन्द्र : देबए दिऔक ! **(अकचकाइत)** आएँ ? की कहलहुँ दस हजारक चेक आपस दए गेल ? ई तँ बहुत आश्चर्यक गप थिक ?

सजेन्द्र : **(प्रवेशक संग)** कोनो आश्चर्यक गप नहि प्रताप भाइ । कोनो आश्चर्यक गप नहि । जखन कोनो मनुक्खके ठेस लगैत छैक, तखन ओकरामे अहिना ''हठात् परिवर्तन'' अबैत छैक । गिरिधरोके आइ सएह भेलैक अछि ।

(शालिनी घरक मोख लग आबि ठार भए घोघ तानि गप सुनैत अछि)

कृष्णचन्द्र : से की सजेन्द्र भाइ ?

सजेन्द्र : अरे, आइ जँ हम उचित समय पर नहि पहुँचितहुँ तँ ओ राम गोपाल ठाकुरक जेठका बेटा- प्रकाश आओर दर्दनारायणक छोटका बेटा गोखुल दूनू मिलिकेँ ओकर जान लैक लेल तैआर छल (जेबीसँ चक्कू निकालि देखाबैत) हे हएआ देखू, ई बड़का चक्कू, ओ दूनू मिलिकेँ गिरिधरक हत्या करबा पर आतुर छल । संयोगसँ हम ओतए पहुँचलहुँ नहि तँ आइ बड़का अनहोनी भए जाइत ।

कृष्णचन्द्र : (आक्रोशमे) अरे अनहोनी होइत छल तँ होमए दैतहुँ । ओ आब जीबिकेँ की करत... ?

सजेन्द्र : प्रताप भाइ ई की बाजि रहल छी ?

(मोख लग ठार शालिनी सिसकि-सिसकिकेँ कानए लगैत अछि ।)

सजेन्द्र : कनिआँ, एहिमे कनबाक कोन काज अछि ? आइ तँ प्रसन्नताक दिन अछि । ओकरा मे आइ असीम परिवर्तनक भाव देखि मोन गद्-गद् भए गेल । कतए अछि गिरिधर ?

सरस्वती : बौआ, ओ तँ आबि कनिआँकेँ ई दस हजारक चेक थमा कतहुँ चलि गेल...

सजेन्द्र : चलि गेल ? कतए चलि गेल ?

सरस्वती : कनिआँ गिरिधर कतए गेल ?

शालिनी : (मोख लगसँ) हमरा से सभ किछु नहि कहलनि । बस एतेक कहलनि जे हम घर छोड़िकेँ जा रहल छी । (कहैत-कहैत कानए लगैत अछि)

सजेन्द्र : (अफसोच करैत) ओह, पहिल बेर ओ जीवनमे ज्ञानक प्रकाश लए अपन घर आएल छल, आर अहाँ सभ ओकरा रोकि नहि सकलहुँ ? भगाए देलहुँ घरसँ ? अहाँ लोकनि ई नीक काज नहि कएलहुँ ! कहू तँ ओ आइ कतेक भावुक छल ? कहुँ कोनो गलत निर्णय नहि लए लिएह । अहाँ सभ चिन्ता नहि करू, हम ओकरादेखैत छियैक

(कृष्णचन्द्रक बाँहि पकड़ि) भाइ देरी जुनि करू हमरा संगे चलू... (दुनू गोटए तेजीसँ बाहरक लेल प्रस्थान करैत छथि । शालिनी मोख लगसँ आगाँ बढ़ि अबैत अछि ।)

शालिनी : (कनैत) माँ हम अपराधी छी । हम हिनकर बेटाक भाव नहि पढ़ि सकलहुँ । हमरा क्षमा कए देथु, हम अपराधी छी...

सरस्वती : हुँः (मुँह फेरैत प्रस्थान)

शालिनी : (विह्वल भए रंजनीक कान्ह पर माथ टेकि कानए लगैत अछि) बहिन...

(रंजनी ओकरा भाव-भंगिमासँ बुझाबैत अछि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)



दृश्य : पाँचम

स्थान : (ब्रिगेडियर कृष्णाचन्द्र प्रतापक हवेली । अर्थात् मंच व्यवस्था पूर्ववत । मंच पर मद्धिम प्रकाश । कृष्णाचन्द्र सोफाक मध्यमे बैसल छथि । गिरिधरक सन्दर्भमे सरस्वतीक संग बाद-विवाद भए रहल अछि जे मात्र मूक अभिनयसँ बुझाएल जाइत अछि । मुँहसँ स्वर नहि निकलैत अछि । सरस्वती सेहो कनैत-खिजैत किछु कहि रहल छथि । शालिनी अर्द्ध घोघ तानि ठार भए अत्यन्त पीड़ाक अनुभव कए रहल अछि । गिरिधरक विधवा भाउज रंजनी एवं रोहण सेहो एक कातमे ठार भए सुनि रहल अछि । घरमे एकटा कलहक वातावरण पसरल बुझना जाइत अछि एवं एहि तरहक मूक अभिनयक प्रक्रियामे नेपथ्यसँ काल, परिस्थिति एवं क्रमशः संवादक भाव-भंगिमा केँ दर्शक-दीर्घा तक पहुँचएबाक एकटा गम्भीर घोषणा कएल जाइत अछि ।)

घोषणा : ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक छोट पुत्र गिरिधर जे सदिखन दारुक निसाँमे मातल रहैत छल, ओकरा हठात् घर छोड़ला लगभग दू बरख बिति गेल । ओ कतए गेल, की करैत अछि आओर ओ जीबैत अछि कि मरि गेल, एखन धरि ओकर कोनो अता-पता नहि । ओकर मित्रबंधु द्वारा विश्वासघातक उपरान्त ओकरामे एकटा परिवर्तन आएल छल, किन्तु ओकर स्त्री शालिनी ओकरासँ एतेक

घृणा करैत छल कि ओकर परिवर्तनक भावकेँ परेख नहि सकल। उनटा आवेशमे आबि ओकरा थापड़ मारि तिरस्कार कएलक। नित्य रोजक ओकर बहानाबाजी आओर दुराचारक पराकाष्ठा पा होएबाक कारणे घरमे सभ ओकरासँ घृणा करए लागल छल। घरमे रोज एकटा विमत कलह जिनगीक दैनन्दिनी बनि गेल छल। टोल-पड़ोस सेहो प्रायः तंग आबि गेल छल। आब सभ चैनक निन्द सुतैत अछि। परन्तु गिरिधरक पत्नी शालिनीक चैन के कहए, रातुक निन्द तक उड़ि गेल अछि। सदिखन अपन पतिक प्रतीक्षा एवं पश्चातापक अग्नि कुण्डमे जरैत रहैत अछि। आओर ताहि परसँ सासुक दुर्व्यवहार सेहो सहए पड़ैत अछि।

एहि परिवारक हितचिन्तक सजेन्द्र काका गिरिधरकेँ तकबाक अथक प्रयास कएलनि किन्तु सभ व्यर्थ। नहि जानि गिरिधर कतए अछि ? कोन अवस्थामे अछि ? आइ गिरिधरक अनुपस्थिति एहि ब्रिगेडियर परिवारक लेल एकटा प्रश्नचिन्ह सेहो बनि गेल अछि। एक दिस-एकटा स्त्रीक सोहाग तँ दोसर दिस माएक कोखिक जनमल सन्तानक स्नेहवात्सल्यक सन्ताप ! किन्तु पाषाण हृदयक पिता रिटायर्ड ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रताप अपन स्वाभिमानक चट्टान पर एखनहुँ ठार अड़ल छथि। ओ कहैत छथि एहन पुत्रसँ निपुत्र नीक। एहि सभ कारणे घरमे एखनहुँ शान्ति नहि, अशान्तिक वातावरण सभक हृदयकेँ झूर-झमान कएने रहैत अछि... । **(घोषणाक उपरान्त कृष्णाचन्द्र प्रताप उच्च स्वरे बाजि उठैत छथि। मंच पर हठात् पूर्ण प्रकाश पसरि जाइत अछि। सभक चेहरा स्पष्ट देखना जाइत अछि।)**

कृष्णचन्द्र : ओफ... । हजार बेरि कहि चुकल छी जे ने ओ हमर बेटा, आओर ने हम ओकर बाप... । ओ हमरा लेल मरि चुकल अछि। हमरा तँ एकहि टा बेटा छल गोपाल। किन्तु ओहो धोखाबाज ठहरल। एहि बुढ़ारीमे एकटा कुपात्रकेँ कपारपर राखि हमरा असगर छोड़ि चलि गेल। एकटा बात अहाँ कान खोलिकेँ सुनि लिअ। जँ हम जीबैत रहि गेलहुँ तँ ओहि कुलद्रोहीकेँ अपन पुत्र किन्नहुँ नहि स्वीकार करब। एतबे नहि हमरा मुइलाक बादहु ओ हमरा मुँहमे आगि नहि देत... । हमरा मुँहमे आगि देत हमर ई पोता **(कोरामे लैत)** श्रीमान रोहणचन्द्र प्रताप ! हमर घरक कुलदीप ! एहि प्रताप वंशक सूर्य।

रोहण : दादाजी हम अहाँक मुँहमे आगि नहि देब !

कृष्णचन्द्र : किएक ?

रोहण : आहिरेबा अहाँक तँ मुँहे झड़कि जाएत।

कृष्णचन्द्र : अरे हम एखन थोड़ेक कहैत छी ? हमरा मुइलाक बाद !

रोहण : लेकिन किएक ? हम अहाँक मुँहमे आगि किएक देब ?

कृष्णचन्द्र : लोक जखन बूढ़ भए निष्प्राण भए जाइत अछि तखन ओकर बेटा वा पोता ओकर मृत शरीरकेँ श्मशानघाट मे लए जा कें ओकरा मुँहमे अग्नि प्रज्वलित कए संस्कार करैत अछि। इएहे सामाजिक परम्परा थिक।

रोहण : किन्तु पापाजी जखन मरि गेलखिन तखन हम हुनका मुँहमे आगि लगा कहाँ संस्कार कएलिअनि ?

कृष्णचन्द्र : **(विस्मित आओर दुखी भए)** आएँ ? हँ अहाँ ठीक कहि रहल छी... ।

रंजनी : रोहण, अहाँ निच्चाँ उतरू, दादाजीकेँ किएक तंग कए रहल छिअनि।

रोहण : मम्मीजी, दादाजी हमरा समझा रहल छथि। हम तंग कहाँ कए रहल छिअनि ? दादाजी अहाँक आँखिमे नोर ? सॉरी दादाजी, हमरा सँ गलती भए गेल।

कृष्णचन्द्र : नहि रोहण, अहाँक प्रश्न एकदम ठीक अछि। जे व्यक्ति मातृभूमिक रक्षार्थ युद्धभूमिमे शत्रुसँ लड़ैत वीरगतिकेँ प्राप्त करैछ, ओकर अन्तिम संस्कार राष्ट्रीय मर्यादाक अनुसार तोपक सलामीक संग देशक वीर जबान लोकनि करैत छथि।

रोहण : ओह दादा जी, यू आर ए ग्रेट ! एण्ड माइ फादर इज ऐ वेरी-वेरी ग्रेट... । आइ एम प्राउड आफ माइ फादर दादाजी।

(सजेन्द्रक खखसैत प्रवेश। शालिनी एवं रंजनी धखाइत कनेक घोघ तानि, कात भए जाइत अछि।)

सजेन्द्र : की बात छैक प्रताप भाइ, बड़ए चहल-पहल घरमे देखि रहल छी। की औ रोहणजी, आइ स्कूल नहि गेलिऐक ?

रोहण : अहूँ बुद्धू छी दादाजी, अहाँकेँ बूझल नहि अछि आइ सण्डे छैक।

सजेन्द्र : ओहो हमरा तँ बुझले नहि छल जेँ आइ सण्डे थिकै । असलमे हम अहाँ जकाँ पढ़ल लिखल तँ छी नहि । हमरा लेल जेहने सण्डे तेहने मण्डे- सभ बराबरि... हा... हा... हा... की बात छैक प्रताप भाइ, किछु गम्भीर-गम्भीर सन देखि रहल छी । कोनो खास बात ?

कृष्णचन्द्र : अरे, एहि घरमे रोजहि खास बात होइत अछि । गिरिधर घर की छोड़लक, सभ चाहैत अछि, आब हमहूँ ई घर छोड़ि दी । सभहक आँखिक काँट बनल छी । खास कए अहाँक भाउजिक ।

सरस्वती : नीक भेल बौआ, अहाँ समय पर आबि गेलहुँ । आइ फैसला भएकेँ रहए । हम हिनका कहलिअनि एना हाथ पर हाथ धए कतेक दिन बैसल रहब, गिरिधरकेँ घर छोड़ला दू बरख बीति गेल ओकरा ताकबाक किएक नहि चेष्टा करैत छी । ताहि द्वारे हमरा की नहि गञ्जन कएलनि । लड़ाइक मैदानमे बन्दूक चलबैत-चलबैत हिनकर छाती बज्र भए गेलनि । किन्तु हम तँ ओकर माए छिऐक । **(सरस्वती कानए लगैत अछि ।)**

सजेन्द्र : अरे भौजी, एहि लेल कनैत किएक छी ? हम की गिरिधरकेँ तकबामे कोनो कसरि छोड़लहुँ अछि ? ओ जतए होएत एकदम ठीक होएत, एकदम ठीक होएत । हमर विश्वास कहैत अछि, ओ एकदिन अवश्य घर आओत... ।

सरस्वती : भगवान अहाँक मुँहमे अमृत देथि ।

सजेन्द्र : प्रताप भाइ ! अहूँकेँ एतेक हठ नहि करबाक चाही । किछु होएक, छी तँ अहाँक सन्ताने ओहो ।

कृष्णचन्द्र : केओ हमर सन्तान नहि अछि । जे हमर सन्तान छल से हमरा बीच मझधारमे छोड़ि चलि गेल । आओर ओहि अवण्ड लुच्चाकेँ अहाँ सन्तान कहैत छी, जे अपना माए-बाप, भाउजिक एतेक अपमान कएलक । एकटा पढ़ल लिखल कुलीन परिवारक कन्याक सिउँथिमे

सिनूर घसि ओकर सभटा गहनाकेँ दारूक बोतलमे धए पिबि गेल । तकरा अहाँ संतान कहैत छी ? जे माए-बापक सओख-मनोरथकेँ उजाड़ि ब्रिगेडियर परिवारक मान-प्रतिष्ठाकेँ नष्टनाबूत कए देलक, तकरा अहाँ सन्तान कहैत छी ? नहि-नहि, ओ हमर सन्तान नहि अछि... ।

सजेन्द्र : प्रताप भाइ ! हम अहाँक सभटा बात मानलहुँ । किन्तु की करबैक । सन्तानक मोह वश मनुष्यकेँ समझौता करए पड़ैत छैक ।

कृष्णचन्द्र : मुदा हम समझौता कएनाइ नहि जनैत छी ।

सजेन्द्र : नहि जनैत छी तँ हम सिखा देब । खैर ई सभ गप एखन छोड़ू आओर हमरा संगे चलू...

कृष्णचन्द्र : कतए ?

सजेन्द्र : चञ्चला आँगन ।

कृष्णचन्द्र : चञ्चला आँगन माने ।

सजेन्द्र : माने मकोइक खेत हा-हा-हा चलू मचान पर बैसकेँ कनेक काल अड्डा मारब आओर मकोइ सेहो खाएब । चलू-चलू छोड़ू ई सब टेनसन फेनसन...

सरस्वती : बौआ कनेक बैसू ने, चाह बनबाए नेने अबैत छी । ऐ सोना सुन्नरि...

सजेन्द्र : नहि भौजी एखन चाह-ताह नहि पीब । भोरसँ बूझू जे चारि बेर पाँच बेर पीने होएब । जतए जाइत छी ओतहि चाह ।

सरस्वती : तँ कने जलखै लेने अबैत छी ।

सजेन्द्र : अरे नहि भौजी आइ तँ हम सभ मकोइ खेतमे मचान पर आरामसँ बैसि, मकोइक ओरहा जलखै करबैक ।

सरस्वती : **(मजाक करैत)** ऊँह ओहिना तँ अहाँक सभटा दाँत लटकल अछि । ओरहाक सङ्ग ओहो ने घोँटा जाए...

सजेन्द्र : हूँ, ई तँ चिन्ताक विषय थिक भौजी, किन्तु ब्रिगेडियर साहेब कोन दिन काज आओताह । घोँटलाहा दाँत हिनके ने निकालए पड़तनि हा-हा-हा- चलू प्रताप भाइ ।

रोहण : दादाजी, हमहूँ अहाँक संग मकोइक खेत जाएब । हमहूँ मचान पर बैसिकेँ ओरहा खाएब । आओर अड्डा मारब... (सभ हँसैत अछि।)

कृष्णचन्द्र : हम अहाँ केँ दोसर दिन लए जाएब । एखन अहाँ सरजीक सभटा टास्क तैआर कए लिअ । हम अहाँक वासते ओरहा घरेमे भेटै आएब । ओ. के. ?

रोहण : ओ.के. दादाजी !

कृष्णचन्द्र : हूँ, चलू सजेन्द्र भाइ, कनेक मोन बहटा ली ।

सजेन्द्र : हँ चलू-चलू... (**दुनू गोटाक प्रस्थान**)

सरस्वती : (**शालिनीसँ**) आब मुँह की तकैत छी ? सदिखन नएनसँ नोर टपकाएलासँ जिनगी नहि कटत । जाउ बरतन-बासन सभ माँजूगे । एक गोटए साएँ केँ खएलहुँ आओर दोसर गोटए साएँकेँ बैलएलहुँ। अलच्छी सभ नहि तन ।

रंजनी : माँ हिनको बाजब काल होस नहि रहैत छन्हि । हमरा जे कहैत छथि से कहैत छथि । किन्तु एहि मे एहि बेचारीक कोन दोष ? दोष तँ हिनके बेटामे छलनि ।

सरस्वती : आहा... हा... हा... सभ दोष हमरे बेटामे । अहाँ लोकनि तँ गुणक भण्डार छी । जँ ई ओहि दिन हमर बौआकेँ रोकि लैतएह तँ ओ कतौ नहि जाइत । ई सभ चक्रचालि एकरे रचल अछि ।

शालिनी : माँ, हिनकर बेटा कोनो बकरीक बच्चा नहि छलखिन जेँ हुनका हम पकड़ि लितहुँ ।

सरस्वती : देखैत छी कनिआँ, एकर ठोर एखनहिसँ कोना बकरी जकाँ चलैत अछि । ऐ तोँ हमरा मुँहलागल जबाव देबएँ ?

शालिनी : जबाव तँ आरो नीक दए सकैत छिअनि, किन्तु एखन नहि देबनि । समयक प्रतीक्षामे छिअनि । हम तँ स्वयं एहि नरकक जीवनसँ ऊबि चुकल छी । कहिआ ने ई घर छोड़ि भागि पड़ाएल रहितहुँ किन्तु एकटा आशाक प्रदीपजे मोनमे जड़ि रहल अछि ओ हमरा रोकिकेँ रखने अछि । आओर तेँ हम हिनका सभक मारि-गाड़ि अपमानक माहुर खाएके जीबि रहल छी...

सरस्वती : (**हठात् शालिनीक माथक केश पकड़ि**) गे अलच्छी, तोहर एतेक ठेसी । तोँ हमरा उंपदेश देबएँ ।

रंजनी : माँ ! माँ !! ई की कए रहल छथि । छोड़थु... छोड़थु, टोल पड़ोस सुनतनि तँ की कहतनि ? छोड़थु ने... ।

सरस्वती : (**आओर आवेशमे**) हमरा छोड़ि दिअ कनिआँ । एकर एतेक साहस ? ई हमरा संगे मुँह चलाउत ? दुनिआँमे एतेक लोक जहर-माहुर खाए केँ मरैत अछि, तोरा मरबाक इच्छा नहि भए रहल छौक कुलटा, निर्लज्जी... ।

रोहण : (**सरस्वतीक हाथ व्याकुलतासँ छोड़बैत**) दाइ माँ, दाइ माँ !! काकीकेँ छोड़ि दिअनु...(**नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि**।)



दृश्य : छठम्

(**मंच व्यवस्था पूर्ववत । समय भोरु पहर । शालिनी हाथमे एकटा माहुरक सीसी लए आत्म-हत्याक साहस जुटा रहल अछि । सीसी मुँह तक लए जाइत सहसा ठहरि अपन आन्तरिक व्यथा स्वतः अभिव्यक्ति करैत अछि । सामने टेबुल पर एकटा चिट्ठी एवं कलम राखल देखना जाइत अछि ।**)

शालिनी : (**स्वतः**) बाबूजी, हमरा क्षमा करब ! हम अहाँक आदेशानुसार एहि परिवारमे बहुत हदतक 'एडजस्ट' करबाक चेष्ट कएलहुँ, परन्तु आब सहाज नहि भए रहल अछि... एकटा आशाक दीप जे सदिखन टिमटिमाएत छल से आब मिझा रहल अछि । नहि जानि पछिला जन्म में हम कोन एहन अपराध कए चुकल छी, जे आइ सोहागिन रहैत विधवा सन जिनगी बिता रहल छी । विधवा रहितहुँ तँ तैओ सबूर करितहुँ किन्तु (**कनैत**) नहि... आब हंमरा आज्ञा दिअ बाबूजी, किएक तँ अहूँ हमर जिनगीक दुखनामा सूनि बर्दास्त नहि कए सकलहुँ आओर हमरा असगरे छोड़ि ऊपर चलि गेलहुँ ? आब हमरो बजा लिअ बाबूजी, हँ मात्र एकटा बातक अत्यन्त दुख रहि गेल जे हम हुनका सँ गलतीक क्षमा नहि माँगि सकलहुँ !

खैर... ईश्वरक जे इच्छा... सएह होएत... (**शालिनी माहुरक सीसी आवेशमे उठा पीबाक उपक्रम करैत अछि। तखनहि पाँछू सँ रंजनी आबि शालिनीक हाथसँ सीसी छिनबाक प्रयास करैत अछि। किछुखन दुनूमे घिच्चातानी होइत अछि।**)

रंजनी : कनिआँ, कनिआँ... । ई की कए रहल छी ? छोड़ू... छोड़ू... एकरा छोड़ू ।

शालिनी : नहि बहिन, हमरा मरए देथु । हम आब जिनगी सँ तंग भए चुकल छी । हमरा मरए देथु बहिन... हमरा मरए देथु ।

रंजनी : ई की बतहपनि कए रहल छी ? छोड़ब की नहि... ? (**बलपूर्वक छोड़बैत**) छोड़ू... छिआ, छिआ, छिआ पढ़ि-लिखिकेँ कनिआँ इएह सभ सिखलहुँ ? जिनगीसँ एतेक जल्दी हारि मानि लेलहुँ ? इहो नहि सोचलहुँ जे एहि परिवारक भविष्य की हएतैक ? अहाँ तँ एहि संसारसँ मुक्त भए जैतहुँ किन्तु ई समाज आओर कानून तँ इएह ने बुझैत जेँ हम सभ मिलिकेँ अहाँकेँ जहर खुआए मारि देलहुँ... ?

शालिनी : हम स्वेच्छासँ आत्म-हत्या करैत छलहुँ । प्रमाणक लेल (**चिट्ठी देखबैत**) ओ सामने टेबुलपर चिट्ठी लिखल राखल अछि ।

रंजनी : लाख चिट्ठी लिखल राखल अछि । किन्तु समाज आर कानूनक दाव-पेंच नहि बूझल अछि ? एकटा नामी वकीलक बेटी भए एतबो नहि बुझैत छी, अपन शिक्षाकेँ एतेक पैघ अपमान कए रहल छलहुँ ?

शालिनी : बहिन, हम अन्हरा गेल छलहुँ । हमरा क्षमा कए देथु । बहिन हमरा क्षमा कए देथु... ।

(शालिनी रंजनीक कान्ह पर माथ दए कानए लगैत अछि । सरस्वतीक हाथमे आरतीक छिपली लए प्रवेश)

सरस्वती : जय सन्तोषी माता... । जय सन्तोषी माता, गे दाइ, गे माइ भोरे-भोरे कथिक हिलनी-मिलनी भए रहल छैक ? दुनू गोटए मिलिकेँ कोनो षडयंत्र रचैत छलहुँ की ?

रंजनी : माँ इहो हदे करैत छथि । सन्तोषी माताक पूजा कए किएक एना बजैत छथि ? एक देआदिनी दोसर देआदिनीसँ सिनेहसँ बात नहि कए सकैत अछि ?

सरस्वती : हँ किएक नहि ? देखब कतेक दिन टिकैत अछि ई उपरका सिनेह । बुढ़हा एखन धरि राशनक दोकानसँ नहि अएलाह अछि की ?

रंजनी : नहि माँ, कहाँ अएलखिनहेँ !

सरस्वती : इहो बुढ़बा जतए जाइत अछि ओतहि बैसि रहैत अछि...

(नेपथ्यसँ ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक हर्षोल्लासक स्वर, उच्च स्वरे प्रस्फुटित होइत अछि... गिरिधरक माए... गिरिधरक माए... गिरिधरक माए...)

सरस्वती : (**अचरज भावमे**) गे दैआ ई बुढ़बाकेँ आइ की भेलए । गिरिधरक नाम लए के ई नव आवेश ।

(कृष्णचन्द्रक एकटा बड़का भाँड़मे रसगुल्ला लएकेँ प्रवेश)

कृष्णचन्द्र : गिरिधरक माए... गिरिधरक माए... हे लिअ, मुँह मिठ्ठ करू ।

सरस्वती : कथिक खुशीमे ?

कृष्णचन्द्र : ओ सभ बादमे कहब । पहिने रसगुल्ला खाउ ।

सरस्वती : नहि, पहिने कहू, तखन खाएब ।

कृष्णचन्द्र : अरे अपन गिरिधरक पता लागि गेल... ओ एकदम स्वस्थ आओर तन्दुरुस्त अछि ।

(सभक मुँह पर प्रसन्नता देखल जाइछ)

सरस्वती : कतए अछि गिरिधर ? केना अछि गिरिधर ? अहाँ फूसि बजैत छी । गिरिधर भेटैत तँ अहाँ ओकरा लेल एतेक प्रसन्न थोड़ेक होइतहुँ ? ओकरा भेटलाक खुशीमे अहाँ मधुर-मिठाइ थोड़ेक बँटितहुँ ? गिरिधर तँ अहाँकेँ फुटली आँखि नहि सोहाइत छल ।

कृष्णचन्द्र : अरे ओ प्रताप वंशक मर्यादाकेँ आकाश ठेका देलक... एहन तँ सपनोमे नहि सोचने छलहुँ । आइ सरिपहुँ गिरिधर हमर नाम प्रकाशमान कए देलक । लगैए जे खुशी सँ कहीं बताह ने भए जाइ...

सरस्वती : अहाँ तँ हमरो बताहि बना देब । आखिर ओ कोन एहन उतकिरना कएलक अछि जे अहाँ एतेक ओकर बखान कए रहल छी ?

कृष्णचन्द्र : अरे सेनामे कमाण्डर भए गेल । जाहि पद पर गोपाल छल, ओही पद पर आइ गिरिधर सेहो अछि...

सरस्वती : हँ ? की ओ चिट्ठी देलक अछि ?

कृष्णचन्द्र : हँ । किन्तु ओ अपने नहि लिखलक अछि । गोपालक परम मित्र चन्द्रमोहन वेंकट रमन, जे एखन ब्रिगेडियरक पद पर अछि । [illegible] लिखलक अछि । ठहरू सुना दैत छी ।

(मिठाइक भाँड़कें टेबुलपर राखि जेबीसँ पत्र निकालि पढ़ैत छथि ।)

पत्र तँ अंग्रेजीमे लिखल अछि । हम ओकर मूल भाव मैथिलीमे सुना रहल छी । लिखल अछि आदरनीय ब्रिगेडियर साहेब, नमस्कार ! हम कुशल छी आओर अहूँ स्वस्थ होएब । अहाँक छोट पुत्र गिरिधर चन्द्र प्रताप एहि ठाम स्वस्थ आओर चर-फर अछि । ओ किछुए दिनक कटोर परिश्रम आओर लगनसँ फौजीमे एकटा खलबली मचा देलक । युद्धस्थलमे शत्रुकें पानि पिआकें राखि देलक । ओकर एकहिटा संकल्प अछि भारतसँ आतंकवादक समूल विनाश । जाहि आतंकवादी गिरोहक कारणे गोपाल शहीद भेल ओकर प्रत्येक छावनी एवं पुरना अड्डाकें गिरिधर ध्वन्स कएकें राखि देलक । हमरा देशक एहन सपूत पर गर्व अछि । आशा अछि ओ भविष्यमे देशक नाम आर आलोकित करत । ओकर अभूतपूर्व साहस आओर वीरता देखि डिपार्टमेन्ट ओकरा फौजक कमाण्डर बना आओर विशेष दायित्वक भार देलक अछि । हमरा पूर्ण विश्वास अछि ओ एक दिन अवश्य अपन संकल्प पूरा करत ।

अहाँक विश्वासी,

ब्रिगेडियर चन्द्रमोहन वेंकटरमण,

सरस्वती : गे दाइ, ओकर मति कोना बदलि गेलैक ? कने दिअ हम अपनहिसँ पढ़ैत छी... ।

कृष्णचन्द्र : गिरधरक माए, ई चिट्ठी कोनो मैथिलीमे थोड़ेक लिखल अछि । कहलहुँ नहि, ई अंग्रेजीमे लिखल छैक हम तँ मैथिली भावार्थ सुनाइए देलौं अछि । **(शालिनी-, रंजनीकें चिट्ठीक लेल संकते करैत अछि ।)**

रंजनी : बाबूजी कने चिट्ठी देथुन, कनिआँकें पढ़बाक मोन भए रहल छन्हि । हिनकर अंग्रेजी तँ बहुत नीक छन्हि ।

कृष्णचन्द्र : अरे ई तँ हम बिसरिये गेल रही । **(चिट्ठी दैत)** हे लिअ आओर पढ़... आओर कने जोरे सँ पढ़ू जे हमहू सूनि सकी, एहि मे लजएबाक कोन बात ? अहाँ तँ एहि घरमे सभसँ बेसी पढ़ल-लिखल

छी । पढ़ू... (शालिनी चिट्ठीकें पढ़ैत अछि आओर सभ ध्यानसँ सुनैत अछि ।)

From

Brig Chandra Mohan Venkatraman, VrC

Commander

HQ 111 Infantry Brigade

C/o 24 APO

Date.............

DO/CVR/001

Respected Krishna Chandra Pratap

1. I trust this will find you in best of health and spirit. Here everything is also okay. Your son, Girdhar, is also fighting fit and doing well.

2. I wish to inform you that Girdhar, with his hard work and sincere effort, has created a sensation amongst youngsters. His bravery in the frontline as well as against the terrorist has become a nightmare to our adversaries. He maintains only one ambition that the India should totally be freed from the clutch of terrorism.

3. You will also be happy to know that terrorists group who had caused untimely death of your elder son, Gopal, is hardly in existence now, as all their camps and hideouts have been targeted and destroyed by Girdhar and his men. We are proud of Girdhar, who is really a patriotic son of Mother India. We are confident that in future also he would bring glory to the Nation.

4. Seeing his exemplary bravery, courage and dedication towards his duties, he has been made Commander of troops under his command and with this, he has been given much more responsible assignments, for which we are confident that he would be able to achieve his goal, ie. eradicating of terrorism from our soil.

With kindest regards to you and your family,

Yours sincerely,

(Sd/-)

(शालिनी चिट्ठीक अन्तिम आखर पढ़ैत-पढ़ैत प्रसन्नतासँ काँपए लगैत अछि ।)

कृष्णाचन्द्र : कनिआँ, एहिमे कनबाक कोन काज अछि ? ई तँ प्रसन्नताक विषय थिक । ओहन अबण्ड-अबारा घरबाला अहाँक आइ देशक कर्मठ सिपाही बनि गेल । ओ परिवारक आओर समाजक संग-संग राष्ट्रक गौरव बढ़ओलक अछि । आर एहन शुभ आओर आनन्दक घड़ीमे अहाँ कनैत छी ।

रंजनी : बाबूजी, कनिआँ खुशीसँ कानि रहल छथि ।

कृष्णाचन्द्र : हँ कनिआँ, अहाँ एकदम ठीक कहि रहल छी । चिट्ठी पढ़बाकाल खुशीसँ हमरो आँखिमे नोर आबि गेल छल ।

शालिनी : (रंजनीसँ) बहिन, जँ आइ ई हमरा नहि बचएने रहितथि तँ हम आइ ई खुशखबरी नहि सुनि पबितहुँ। कतेक पैघ अन्हेर भए जएतएह..., हमरा क्षमा कए देथु बहिन । हम ई की करैत छलहुँ ?

रंजनी : कानू नहि कनिआँ, अहाँक स्थान पर केओ एना कए सकैत छल।

कृष्णाचन्द्र : के की कए सकैत छल ?

रंजनी : किछु नहि बाबूजी, किछु नहि !

कृष्णाचन्द्र : ब्रिगेडियर कृष्णचन्द्र प्रतापक आँखिकेँ ओकर पुतहु धोखा कदापि नहि दए सकैत अछि । अहाँ दुनू गोटए अवश्य किछु नुका रहल छी । ओहि हाथमे की नुकौने छी ?

रंजनी : किछु नहि बाबूजी, किछु नहि ।

कृष्णाचन्द्र : देखाउ की नुकौने छी ? देखबैत छी की नहि ?

(रंजनी माहुरक सीसी बढ़बैत अछि । कृष्णाचन्द्र आश्चर्यसँ देखैत)

कृष्णाचन्द्र : ओ माइ गॉड ! ई तँ जहरक सीसी थिक । एतेक पैघ धोखा ? एतेक नम्हर विश्वासघात ? सेहो हमरा संगे । ई माहुरक सीसी अवश्य नबकी कनिआँ पिबैत छलीह ?

सरस्वती : दैबा रौ दैबा... । आइ तँ हम सभ एखने बन्हा जैतहुँ । ई चण्डलनिआँ हमरा सभके जिबितेमे मारए पर लागल अछि ।

कृष्णाचन्द्र : ओफ ! अहाँ चुप रहू ।

शालिनी : माँ एहन नौबत नहि अबितनि, कारण हम स्वेच्छा सँ आत्म हत्या करैत छलहुँ । प्रुफक लेल लेटर लिखिकेँ राखि देने छलिअनि । (चिट्ठी दिस संकेत करैत) पढ़ि कए देखि लेथु । (कृष्णचन्द्र झटसँ चिट्ठी उठाकेँ पढ़ैत छथि ।)

कृष्णाचन्द्र : बाह ! बाह !! बाह !!! बाह रे हमर पढ़ल-लिखल पुतहु । बहुत नीक काज करैत छलहुँ । बाह ! अहाँ तँ गोपाल आओर गिरिधरोसँ पैघ बहादुर बहरेलहुँ । अरे ओ सभ तँ कमसँ कम देशक वास्ते जान न्यौछाबर करैत अछि । किन्तु अहाँ तँ पढ़ि-लिखिकेँ अपन शिक्षा आओर वंश मर्यादाकेँ कलंकिते नहि अपितु नारी जातिक अपमान करए जा रहल छलौ । कहू तँ देशक एकटा कर्मठ सिपाही आओर ब्रिगेडियर परिवारक पुतहु एतेक दुर्बल आओर डरबुक... ? छिआ, धिक्कार अछि अहाँकेँ ।

शालिनी : बाबूजी, हमरा क्षमा कए देथु । हम जिनगीसँ निराश भए एहि तरहक डिसीजन लेलहुँ । हमरा क्षमा कए देथु बाबूजी... !!!

कृष्णाचन्द्र : ठीक अछि... ठीक अछि आइ क्षमा कए देलहुँ किन्तु दुबारा जँ एहि तरहक दुस्साहस करब तँ हम किन्हु नहि क्षमा करब । अरे हम तँ मिठाइ बटनाइ बिसरि गेल छलहुँ । (मिठाइक भाँड़ उठाकेँ) आइ हम मिठाइ सभकेँ अपनहि हाथसँ खुआएब ।

रोहण : (प्रवेश) सभसँ पहिने हम खाएब दादाजी ।

कृष्णाचन्द्र : ओहो रोहण चन्द्र प्रताप, एतेक काल कतए छलहुँ ?

रोहण : छत पर बैसिकेँ अलजेबरा बनबैत छलहुँ ।

कृष्णाचन्द्र : आब गणितमे कविता बनाउ... हमरा हाथे- 1-2-3 रसगुल्ला खाउ... हा-हा-हा... ।

(कृष्णचन्द्रप्रताप रोहण केँ पहिने रसगुल्ला खुआबैत छथि । तकरा बाद शालिनी, रंजनी आओर सरस्वतीकेँ खुआबैत छथि । सरस्वती खएबामे सकुचाइत छथि । किन्तु कृष्णाचन्द्र जबरदस्ती मुँहमे रसगुल्ला खुआबैत छथि तत्पश्चात् स्वयं रसगुल्ला खाए लगैत छथि । तखनहि

सजेन्द्र काका प्रवेश करैत छथि। सभकेँ देखि अचरजमे पड़ि जाइत छथि।)

सजेन्द्र : अरे की बात छैक प्रताप भाइ, हमरा बिना सूचित कएने अहाँ लोकनि गटा-गट रसगुल्ला खएने चलि जा रहल छी ? ई ठीक बात नहि। आखिर कथिक एतेक पैघ खुशखबरी छैक से हमहूँ तँ सुनी।

कृष्णचन्द्र : ई सभ बादमे सजेन्द्र भाइ । पहिने रसगुल्ला खाउ... !

सजेन्द्र : अरे ओना कोना खाउ पहिने खुशखबरी तँ सुनाउ ?

कृष्णचन्द्र : नो आरगूमेन्ट पहिने रसगुल्ला खाउ-खाउ... ।

(कृष्णाचन्द्र सजेन्द्रक मुँहमे एक बाकुट रसगुल्ला भरि दैत छथि। नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि।)



दृश्य : सातम

(मंच व्यवस्था पूर्ववत् ! कृष्णचन्द्र प्रताप प्रसन्न मुद्रामे अपन परिधान इत्यादि परिवर्तन करबामे अपसिआँत छथि। अपन नबका पोशाक फुरतीसँ पहिर अएनामे मुँह देखि, केशक विन्यास करैत छथि। घरमे एक दूटा ब्रीफकेश राखल अछि। ओ सभ देखलासँ एना प्रतीत होइत अछि। जेना कतौ जएबाक तैयारी चलि रहल अछि।)

कृष्णचन्द्र : (स्वतः) अरे ई सभ कथिक एतेक देरी कए रहल अछि । ई दुनिआँ बदलि जाएत परन्तु ई मिथिलाक स्त्रीगणक स्वभाव नहि बदलि सकैत अछि । ओह, एतेक कतौ शृंगार भेलैक अछि ? हे इएह हमरा देखू, एक सँ सबा मिनटमे रेडी। देखबामे कोनो खराब लागि रहल छी ? अरे इएह ने जे कने वृद्ध भए गेलहुँ। भए गेलहुँ तँ भए गेलहुँ। जुआने ने एक दिन बूढ़ो होइत अछि। हा-हा-हा... किन्तु एखनहुँ एहि रिटायर्ड ब्रिगेडियरक शरीरमे ओहिना जुआनीक उमंग-तरंग विद्यमान अछि। जँ एखनहुँ हमरा केओ युद्धक मैदानमे बन्दूक थमा दिअए तँ कमसँ कम निनानबेटा शत्रुकेँ धराशायी कए तकरा बादहि माटि पर खसब । ओह, ई सभ तँ हमर चुप्पीकेँ भरपूर लाभ उठा रहल अछि। (**घड़ी देखैत**) आब जँ ई सभ बेसी देरी करत तँ ट्रेनो छुटि जाएत । अरे की भेल ...गिरिधरक माए ।

सरस्वती : (**भीतरसँ**) की कहलहुँ ? नहि सुनलहुँ ?

कृष्णचन्द्र : कने सतर्की करु, नहि तँ ट्रेन छुटि जाएत, आओर हिनका लोकनिक सिङार-पटार शेषे नहि भए रहल अछि...

सरस्वती : भए गेल, अबैत छी...

(भीतरसँ रोहणक नवका पेन्ट-शर्ट पहिर प्रवेश)

रोहण : माइ डियर दादाजी, आइ एम रेडी ।

कृष्णचन्द्र : ओहो रोहणजी अहाँ रेडी भए गेलहुँ ? आइ एम ऑलसो रेडी । अहाँ तँ आइ ई नवका ड्रेसमे बहुत सुन्दर लागि रहल छी ।

रोहण : ऑफकोर्स ! हम तँ सुन्दर छीहे दादाजी ।

कृष्णचन्द्र : (**कोरामे लैत**) एबसोल्यूटली करेक्ट माइ स्वीट हर्ट । अहाँ तँ वास्तवमे सुन्दर छी । हमर सुनरका पोता ।

रोहण : दादाजी, हम ट्रेनमे खिड़की लग बैसब ।

कृष्णचन्द्र : अवश्य बैसब । किन्तु ओहिसँ पहिने एकटा काज करू भीतर जाउ आओर दाइ माँकेँ हाथ पकड़िकेँ सोझे लेने आउ ।

रोहण : ठीक छै दादाजी ।

(रोहण जएबाक उपक्रम करैत अछि कि तखनहि भीतरसँ सरस्वती, रंजनी आओर शालिनीक अपना-अपना ढंगसँ सजल प्रवेश होइत अछि।)

रोहण : (**खुशीसँ उछलैत**) दाइ माँ आबि गेलखिंन, काकी आबि गेलखिन। मम्मी आबि गेलै... दाइ माँ आइ तँ अहाँ बहुत टीप-टाप लागि रहल छी।

सरस्वती : दुर जो बतहा, एहनो बात केओ बजैत अछि ?

कृष्णचन्द्र : रोहण एकदम ठीक कहि रहल अछि गिरिधरक माए । एक पलक लेल तँ हमहुँ घबरा गेल छलहुँ । हमरा तँ सन्देह अछि कहूँ रस्तामे छौड़ा सभ ने तंग करए...

सरस्वती : दुर जो... तखन हम जएबो नहि करब ।

(सब ठहाका मारिकेँ हँसैत अछि। तखनहि बाहरसँ खकसैत सजेन्द्र भाइक प्रवेश होइत अछि।)

सजेन्द्र : की औ प्रताप भाइ ! ई चुपे-चाप कतए जएबाक तैयारी भए रहल छैक ?

कृष्णाचन्द्र : अरे सजेन्द्र भाइ ? आउ-आउ कतेक दिनसँ देखैत नहि छलहुँ । कतहुँ गेल छलहुँ की ?

सजेन्द्र : अरे की कहू, उपनयनक नोतपूरी पुरबाक लेल कनेक सासुर गेल छलहुँ । अचानक जाए पड़ल तेँ समाद नहि पठा सकलहुँ ।

कृष्णाचन्द्र : सएह तँ कहैत छलहुँ अहाँ कतए गेलहुँ ।

सजेन्द्र : किन्तु अहाँ सभ हठात् कतए जा रहल छी से तँ कहू ?

कृष्णाचन्द्र : की कहू सजेन्द्र भाइ, गिरिधरक माए हमरा तङ्ग कएकेँ राखि देलनि । हठ ठानि लेलनि जे हाए नारायण हमरा गिरिधरसँ भेँट कराए देबए परत । आओर कने हमरो मोन डोलि जाएब स्वाभाविक अछि । सत पुछू तँ ओकरा फौजक वर्दीमे सजल देखबाक हमर उत्कट उत्कंठा लागल अछि । सरहद पर जा ओकरा एकबेर आशीर्वाद दए आबी ।

सजेन्द्र : बहुत नीक प्रताप भाइ । बहुत नीक ! परन्तु अहाँ लोकनि किछु बेसी अगुता गेलहुँ । इहो नहि सोचलियैक जे एखन देशक केहन स्थिति जा रहल छैक ? एखन केओ घरसँ बहराइत अछि ! देशक चारु भाग आतंकवादक साम्राज्य पसरल अछि । नहि जानिकेँ कखन ओकर सिकार भए जाएत । बम-बारुद, तोप आओर बन्दूकक बीचमे सम्पूर्ण देशक जीवन ओझराएल अछि । सभ त्राहिमाम् त्राहिमाम् कए रहल अछि... आओर अहाँ लोकनि एहि सभहक बिन परबाहि कएने... ।

सरस्वती : नहि बौआ, आब जुनि रोकू । जखन ओ माए-बापकेँ बिसरि एतेक पैघ जिद्द ठानि लेलक, एकटा कुशल-मंगलक पोस्टकार्ड तक नहि पठौलक तेँ आइ हमरो लोकनि इएह पर उतरि आएल छी जे आखिर जे होएत ओकरासँ भेँट करबेटा करब । आइ किछु दिनसँ रातिमे निन तक नहि अबैत अछि। आओर कनिको आँखि लगैत अछि तँ खराब-खराब सपना सभ अबैत अछि... बुझा पड़ैत अछि जेना बौआ कोनो संकटमे फँसि गेल हो... **(कनैत अछि)**

सजेन्द्र : अरे... रे... भौजी, एहिमे कनबाक कोन काज । गिरिधर तँ वीर अछि महावीर । ओ एकदम स्वस्थ होएत । अहाँ लोकनि एकदम प्रसन्न मुद्रामे जाउ । हम तँ ओहिना कनेक बिचार देबए लगलहुँ । जाउ ओकरा हमरो दिससँ आशीर्वाद दए देबैक । एकरे कहैत छैक माए-बापक अपार स्नेह । जाउ, अहाँ सभकेँ देरी भए रहल अछि ।

कृष्णाचन्द्र : सजेन्द्र भाइ । ई समूचा हवेली अहीं पर छोड़ि कए जाए रहल छी । कनेक ध्यान रखबैक ।

सजेन्द्र : अरे प्रताप भाइ, इहो कहबाक काज । अहाँ सभ निश्चिन्त भएकेँ जाउ ।

रोहण : दादाजी, जल्दी चलू ने, नहि तँ ट्रेन छुटि जाएत ।

कृष्णाचन्द्र : हँ-हँ, चलू-चलू बाबाकेँ गोड़ लागि लिअनु ।

(रोहण, सजेन्द्र बाबाकेँ गोड़ लगैत अछि । सजेन्द्र, प्रताप भाइ आओर सरस्वतीकेँ प्रणाम करैछ । सभ जएबाक लेल उद्यत होइत अछि कि तखने बाहरसँ पोस्टमैनक स्वर- ब्रिगेडियर साहेब तार अछि... कृष्णाचन्द्र चौंकि कए- तार ! लेबाक लेल बाहर जाइत छथि । आओर तार लए प्रवेश करैत छथि । तार आतुरतासँ खोलि पढ़ए लगैत छथि । नहु-नहु हुनका चेहरा पर आश्चर्य, शोक, हर्षोल्लास आओर अनगनित पीड़ाक भाव परिलक्षित होमए लगैत अछि । चिट्ठी पढ़ैत-पढ़ैत बीचहिमे बहुत जोरसँ चिचिआ उठैत छथि- नहि... गिरिधर के किछु नहि भए सकैत अछि- आओर मूर्तिवत स्तब्ध ठार रहैत छथि ।)

सरस्वती : **(विह्वल भए)** गिरिधर केँ की भेलैक ? बाजूने, गिरिधरकेँ की भेलैक ? अहाँ एना चुप किएक छी ? गिरिधर नीकेँ अछि किने ? बाजूने गिरिधरकेँ की भेलैक ? बाजू ने गिरिधरकेँ की भेलैक ?

कृष्णाचन्द्र : ओ आब एहि संसारमे नहि रहल ।

सरस्वती : नहि, ई नहि भए सकैत अछि । ई किन्नहुँ नहि भए सकैत अछि । अहाँ फुँसि बाजि रहल छी ।

कृष्णाचन्द्र : गिरिधरक माए, ई हम थोरेक कहि रहल छी । ई तार कहि रहल अछि । आओर ई सरकारक पठाओल बीमा पत्र मिथ्या नहि भए सकैत अछि । एहिमे लिखल अछि अपन गिरिधर आओर ओकर टोली असंख्य देश-द्रोही आओर आतंकवादीसँ वीरता पूर्वक लड़ैत शहीद भए गेल । छहोछित शवक ढेरीसँ शहीद गिरिधरक पहिचान करब कठिन अछि ।

सरस्वती : (विदीर्ण भए कनैत) नहि, हमर बौआकेँ किछु नहि भए सकैत अछि । हमर बौआकेँ किछु नहि भए सकैत अछि । (छाती पिटैत) बौआ रे... तोँ ई की कएले रे बौआ आब हम तोरा बिना कोना जीअब रे बौआ । ई चण्डलबा हमरा बच्चाकेँ खा गेल । खा गेल हमरा बच्चा केँ ई चण्डलबा ।

सजेन्द्र : भौजी ! भौजी !! धैर्यसँ काज लिअ । अधीर जुनि होउ । गिरिधर मूइल थोरबहि । ओ तँ आब अमर भए गेल... एहि देशक गौरव बढ़एलक अछि । प्रताप वंशक मर्यादाकेँ ओ आओर उज्ज्वल कएलक अछि । **(सजेन्द्रक आँखि नोरसँ भरि जाइत छनि । जकरा कान्ह परहक गमछासँ पोछैत छथि ।)**

शालिनी : माँ ई कथी लेल एतेक कनैत छथि । हुनका किछु नहि भेलनि अछि । हुनका केओ नहि मारि सकैत अछि । हमर विश्वास कहैत अछि ओ अवश्य अओताह... ।।

सरस्वती : नहि गे बतहिआ... आब ओ कहिओ नहि आओत । गोपालोक बेर सभ अहिना कहैत छल... किन्तु ओ कहाँ आएल ? आइ हम निपुत्र भए गेलहुँ ।

रंजनी : (कनैत) माँ ई एना करती तँ हमरा सभकेँ के देखत ? रोहणकेँ देखैत छथिन कतेक कनैत अछि । ईहो तँ हिनकर सन्तानेक रूप छनि ।

रोहण : **(कनैत किन्तु आत्मबलसँ हौसला भरल)** दाइ माँ... नहि कानू, दाइ माँ,... काकाजी, पापाजीक्र सभटा दुश्मनकेँ जानसँ मारि देलखिन । आओर हम जखन बड़की टा होएब तँ काकाजीक सभटा दुश्मनसँ बदला लेबैक... ।

सरस्वती : **(रोहण के छातीसँ लगबैत)** नहि रे बौआ... तोँ एहन गलती जुनि करिहेँ... तोरा एहन गलती नहि करए देबौक ।

कृष्णाचन्द्र : गिरिधरक माए. अहाँ देशक एकटा वीर सिपाहीक माए रहैत, एकटा साधारण माए जँका कनैत छी ? ई एकदम शोभा नहि दैत अछि । गिरिधर एहि मातृभूमिक रथार्थ शहीद भेलए । एहि वंशक मर्यादाक

पागकेँ नक्षत्रो सँ बेसी ऊच्च कएलक अछि । हम ओकर बाप छिऐक, की हमरा ओकरा लेल दर्द नहि अछि ? हम अपन छाती चीरकेँ देखा नहि सकैत छी जे हमरा हृदयमे कतेक कष्ट अछि । दू-दू टा जुआन बेटाकेँ हम हरएलहुँ अछि । की हमरा कानए नहि अबैत अछि ? अबैत अछि, किन्तु हम अपन हृदयकेँ पाथर बनाकेँ रखने छी... पाथर... ।

सरस्वती : किन्तु एकटा माए, अपन हृदयकेँ पाथर नहि बना सकैत अछि...।

कृष्णाचन्द्र : जनैत छी, गिरिधरक शौर्य आओर अद्‌भुत पराक्रम देखिकेँ भारत सरकार ओकरा परमवीरचक्रक पुरस्कार देबाक घोषणा कएलक अछि । हमरा लोकनिकेँ ओ पुरस्कार ग्रहण करबाक लेल 15 अगस्त केँ सरकार बजौलक अछि... चलब किने... एकहि बरखमे दुइ-दुइटा परमवीरचक्र प्राप्त करब । दुनू बेटाक बदलामे ।

सरस्वती : **(आवेशमे)** हमरा नहि चाही पुरस्कार... । पुरस्कार लेबाक अछि तँ अहाँ जाउ आओर पुरस्कार लए गरदनिमे टाङ्गि सौंसे गाममे डिगडिगिआ पिटाउ आओर सौंसे गौआँ घरुआकेँ गर्वसँ कहिऔक जे हमर बेटा देशक खातिर शहीद भए गेल... ई ओकरे पुरस्कार थिक ।

(सरस्वती कनैत-कनैत मुर्छित भए खसि पड़ैत अछि । सभ मिलि सरस्वतीकेँ सम्हारैत अछि ।)

कृष्णाचन्द्र : गिरिधरक माए, की भेल... आँखि खोलूने, कनिआँ मुँह की तकैत छी एक गिलास जल नेने आउ...

(रंजनी भीतर जाइत अछि आओर शीघ्रतासँ गिलासमे जल नेने अबैत अछि... कृष्णाचन्द्र मुँह पर जलक छिच्चा करैत छथि ।)

सजेन्द्र : भौजी, भौजी आँखि खोलू ने... प्रताप भाइ अहाँ हिम्मतिसँ काज लेब । हम डाक्टर साहेबकेँ बजौने आबैत छी... **(प्रस्थान)**

कृष्णाचन्द्र : गिरिधरक माए होसमे आउ । किएक सभ मिलिकेँ हमरा परास्त करए चाहैत छी ?

शालिनी : **(निर्भय)** बाबूजी, हिनका केओ परास्त नहि कए सकैत अछि । आओर जहिना ई परास्त नहि भए सकैत छथि तहिना हिनकर बेटा

सेहो दुश्मनसँ परास्त नहि भए सकैत छन्हि । हुनका केओ नहि मारि सकैत अछि । ई सभ तँ अनेरहुँकेँ हंगामा ठार कएने छथि... प्लीज बाबूजी, हमर रिक्वेस्ट अछि ई सभ नारमल भए जाथु कारण हुनका किछु भेबे नहि कएलन्हिँ ।

कृष्णचन्द्र : नहि बेटी, ई सरकारक भेटल टेलीग्राम मिथ्या नहि भए सकैत अछि । गिरिधर आब एहि धरती पर नहि रहल ।

शालिनी : **(बताहि सदृश्य)** हा... हा... हा... । **(शालिनी विक्षिप्त जकाँ हँसए लगैत अछि । सभ चकित भए देखैत अछि... नेपथ्यसँ घोर मुसलाधार वृष्टि, अन्हर-बिहारि आओर ठनकाक गरजब प्रस्फुटित होइत अछि... किछु पलक लेल सम्पूर्ण मंच अन्धकार भए जाइत अछि– दूरसँ चिकरैत गिरिधरक अत्यन्त काटर स्वर गुंजायमान होइत अछि माए... किछु क्षणक लेल मंच स्तब्ध भए जाइत अछि... पुनः नहु-नहु मन्द प्रकाश रोहण पर पड़ैत अछि जकर आँखि बाहरक द्वारिपर अटकल अछि । धीरे-धीरे इजोत बाहरक द्वारि पर पड़ैत अछि । हठात् बाहरक द्वारिसँ घायल अवस्थामे, माथामे पट्टी बान्हल रक्तरंजीत फाटल-चिटल वर्दीमे, दुनू काँखमे लागल वैसाखीक सहयोगसँ गिरिधरक प्रवेश होइत अछि । रोहणक पहिल दृष्टि पड़ितहि ओ जोरसँ बाजि उठैत अछि... काकाजी... प्रकाश सगरो पसरि जाइत अछि । सभ घुरिकेँ विस्मित भावमे गिरिधरकेँ देखैत अछि...)**

रोहण : काकाजी आबि गेलखिन... काकाजी आबि गेलखिन । काकाजी देशक दुश्मन सभकेँ मारिकेँ आबि गेलहुँ ने ?

गिरिधर : **(एक हाथक वैसाखी दोसर हाथमे रखैत रोहणकेँ भरि पाँजमे पकड़ि)** हँ रोहण, हम देशक सभटा दुश्मनकेँ मारि कए आबि गेलहुँ ।

रोहण : थैंक्यू अंकल जी ! यू आर ए ग्रेट मैन ! आई एम प्राउड ऑफ यू...

कृष्णचन्द्र : **(आश्चर्य)** गिरिधर तोँ ? तोँ जिबैत छह ?

गिरिधर : **(कृष्णचन्द्रकेँ प्रणाम करैत)** हँ बाबूजी । अहाँ लोकनिक अपार स्नेह आओर आशीर्वाद मुरदामे प्राण फूकि देलक । **(जाए रंजनीक पैर छुबैत)** किन्तु माएकेँ की भेलैक । **(लग जाइत)** माए, उठ माए हम आबि गेलहुँ ।

शालिनी : माँ उठथु ने... देखथु हिनकर बेटा आबि गेलखिन । माँ उठथु ने... ।

सरस्वती : **(होसमे आबि)** कतए अछि हमर बौआ ? कतए अछि हमर गिरिधर ?

गिरिधर : माए हम तोरा लगमे बैसल छिऔक देख... ।

सरस्वती : **(गिरिधरकेँ भरि पाँज धए भोकारि मारि कनैत)** बौआ रे बौआ कतए चलि गेल छलएँ... अपन माएओकेँ बिसरि गेल छलएँ... ? **(शरीरसँ रक्त बहैत देखि)** हे भगवान तोहर तँ पूरा शरीर खूनसँ भिजल छौ... कोन जनपिट्टा हमर बच्चाकेँ ई दुर्दशा कएलक अछि से नहि जानि... ।

गिरिधर : माए, तोँ अनेरहुँ किएक कनैत छेँ ? हमरा किछु नहि भेल अछि, हम एकदम ठीक छी । युद्ध भूमिक सेनाकेँ शरीरसँ टपकैत शोणित तँ ओकर शृंगार थिक । जेना एकटा सोहागिनकेँ सभसँ पैघ शृंगार ओकर सिउँथिक ललका सिन्दुर होइत अछि ।

शालिनी : **(करुणाक भाव सहित प्रसन्नता)** माँ, हम कहैत छलिअनि ने हिनका किछु नहि भेलन्हि हेँ । ई सभटा खबरि मिथ्या थिक ।

गिरिधर : शालिनी, अहाँक ई दृढ़ विश्वास, हमर वीरताकेँ एतेक शक्तिशाली आओर प्रखर बनाकेँ रखलक जे मृत्यु जिनगी सँ भयभीत भए भागि पड़ाएल ।

शालिनी : **(विदीर्ण भए)** नहि... हम किछु नहि, एहिमे हमर कोनो अवदान नहि अछि, आइ हमरे खातिर अहाँक ई अवस्था भए गेल... **(शालिनी बच्चा जकाँ कानए लगैत अछि । रंजनी सान्त्वना स्वरूप सम्हारैत अछि ।)**

गिरिधर : शालिनी अहाँ कानि रहल छी ? आइ हम जे ई गरिमा प्राप्त कएलहुँ अछि मात्र अहाँक कारणे । हमर जिनगीक मुनहारि साँझमे भोरक अरुण किरण बनि, अहीं आलोकित कएलहुँ अछि । आइ हम जे किछु छी अहींक कारणे, हमर जीवनक ''हठात् परिवर्तन'' अहाँ छी शालिनी । अहाँ छी... ।

शालिनी : (गिरिधरकें प्रणाम करैत) हमरा क्षमा कए दिअ । हम अहाँक मनोभावकें नहि परखि सकलहुँ । हमरा क्षमा कए दिअ, हम अहाँक संगे...

गिरिधर : शालिनी, मनुक्खक पश्चातापे ओकर क्षमाक प्रतीक थिक । (शालिनी कनैत अछि) शालिनी, अहाँक ई कननाइ शोभा नहि दैत अछि... आब अहाँ दारूखोर गिरिधरक पत्नी नहि, अहाँ एकटा सेनानायकक पत्नी छी । कमाण्डर गिरिधरचन्द्र प्रतापक पत्नी, चलू नोर पोछू... ।

रंजनी : बौआ, कनिआँक ई नोर एतेक जल्दी सुखाएबाला नहि अछि ।

गिरिधर : (रंजनीक समीप जाइत) भाभीश्री, हमर आँखि अहाँसँ मिलैत लजा रहल अछि । भाभीश्री हमरा अहाँ क्षमा कए दिअ । हम अहाँकें कतेक दुख देलहुँ ।

रंजनी : (मजाकक भावमे) हँ, बहुत दुख देलहुँ । आब छोड़ू ई सभ बितलाहा बात सभकें । जल्दीसँ फ्रेश भए, भोजन पर बैसू । तखन बैसि कें घन्टहुँ गप-सप करब... ।

रोहण : एब्सोल्यूटली करेक्ट मम्मीजी । सीटिङ्ग एण्ड इटिङ्ग... ।

गिरिधर : (कृष्णचन्द्रसँ) बाबूजी हम अहूँसँ क्षमा याचना माङ्गैत छी । जानि नहि, अनबुझ कही कि जानिबुझ कतेक अपमानित केलौं अहाँकें ।

कृष्णचन्द्र : हा...हा...हा... (गिरिधरसँ आलिङ्गन कए) आइ एम प्राउड ऑफ माइ सन... आइ एम प्राउड ऑफ माइ सन... । लेकिन गिरिधर... ई टेलीग्राम ?

गिरिधर : एकदम सत्य थिक बाबूजी, एखन एतबहि बुझू जे हम ईश्वरक असीम अनुकम्पा आओर अहाँ लोकनिक स्नेहाशीषसँ आतंकवादीक गिरोहकें विध्वंस कए सुरक्षित अपन लक्ष्य स्थान पर पहुँचि गेलहुँ । टीम डाक्टर एखन आरामक सलाह देलक हें । बाबूजी, हम सभटा वृतान्त अहाँ लोकनिकें बादमे बताएब ।

सरस्वती : हाँ बौआ, एखन भीतर चल, आओर पहिने मुँह-हाथ धोके किछु जलखै कएले ।

(डाक्टर साहेबक बैग हाथमे लेने सजेन्द्रक हकमैत प्रवेश)

सजेन्द्र : प्रताप भाइ । डाक्टर साहेब आबि रहल छथि । ओ कतहुँ अन्ताए चलि गेल छलाह तें देरी भेल । भौजी अहाँ ठीक भए गेलहुँ **(गिरिधरकें देखि)** गिरिधर तों ? तों सुरक्षित छह ?

गिरिधर : **(प्रणाम करैत)** अहाँक की विचार सजेन्द्र काका... ।

सजेन्द्र : **(प्रसन्न)** अरे हमर विचारकें गोली मारह । तों सही सुरक्षित आबि गेलह बूझह जे हमर सभटा मनोरथ पूर्ण भए गेल । प्रताप भाइ ! भौजी अरे अहाँ सब आब मुँह की तकैत छी गिरिधरक अएबाक खुशीमे ढोल-पिपही बजबाउ, भोजक बड़का-बड़का टोकना चढ़बाउ आओर सौंसे गाममे स्त्रीगणे-पुरुखे नेओंत, बिजहो पठबाउ... ।

रोहण : **(दादाजीक छड़ी लएकें सोफा पर बैसि जाइत अछि आओर टेबुलपर ठोकैत)** ऑर्डर ! ऑर्डर !!

(सभ एक सङ्गे ठहाका मारैत अछि । नहु-नहु मंच अन्हारमे परिवर्तित होइत अछि ।)

शुभम् मंगलम् ।

समाप्त

अंक : पहिल :: दृश्य : चारिम



बायाँ सँ - रंजनी एवं रोहन

–: पत्राचारक पता :–

आनन्द कुमार झा
13/16 बी., विशेश्वर बनर्जी लेन
कदमतल्ला, हावड़ा – 711101
मोबाइल– 9830848403

–: पोथी प्राप्त करबाक पता :–

श्री अभय कान्त झा
ग्रा० + पो० मेंहथ (दक्षिणबाड़ि टोल)
भाया– झंझारपुर, जिला– मधुबनी
दूरभाष : 06273-228615

डा० विभूति आनन्द
संपादक 'जखन–तखन'
शास्त्रीनगर, लक्ष्मीसागर, दरभंगा
दूरभाष : 06272-258001

डा० धनाकर ठाकुर
संपादक 'मैथिली संदेश'
डी. 5, श्यामली, राँची-834002
दूरभाष : 0651-2411278

श्री शंकर चौधरी, एडवोकेट
पटना उच्च न्यायालय
इस्ट बोरिंग कनाल रोड
विष्णु पैलेस, पटना

श्री कैलाश कुमार मिश्र
बी. 517, इन्दिरा इनक्लेब
फ़ेज–2, मेन मुबारकपुर रोड, नई दिल्ली
मोबाइल– 9891043854

श्री धीरेन्द्र प्रेमर्शी
कार्यक्रम संचालक 'हेलो मिथिला'
2060/06/22 कोजगरा
काठमांडू, नेपाल

श्री भरत झा
20 नेपथ्य, गुलमोहर रोड
जे.भी.पी.डी. अन्धेरी (वेस्ट)
दूरभाष : 022-26701212
26282819
मोबाइल– 9324546209

पवन बुक स्टॉल
स्टेशन रोड, मधुबनी
दूरभाष : 06276-224532
मोबाइल– 9835486425

नोट : उपर्युक्त पता सँ श्री आनन्द कुमार झा द्वारा लिखित सभ पोथी संग्रह कए सकैत छी।